ज्ञानामृत

फरवरी, 1985
वर्ष 20 ❋ अंक 8

मूल्य 1.35

सचित्र समाचार

हरियाणा के राज्यपाल, भ्राता एस. एम.एच. बरनि, चन्डीगढ़ में नव-निर्मित 'राजयोग भवन' का उद्घाटन करते हुए ।

हाथरस में आयोजित विश्व-कल्याण आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन पूर्व, ब्र. कु. चन्द्रमणी सहायक मुख्य प्रशासिका ब्र. कु. ई. विश्व विद्यालय, अलीगढ़ के जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता जी.के. माथुर, भ्राता आनन्द जी शर्मा, पत्रकार तथा अन्य परमात्मा शिव की याद में खड़े हैं ।

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता, निदेशक निर्माता तथा नव निर्वाचित संसद सदस्य भ्राता सुनील दत्त जी, सान्ता क्रुज (बम्बई) सेवा केन्द्र पर पधारे । उन्हें ब्र. कु. मीरा बहन ने आध्यात्मिक साहित्य भेंट किया ।

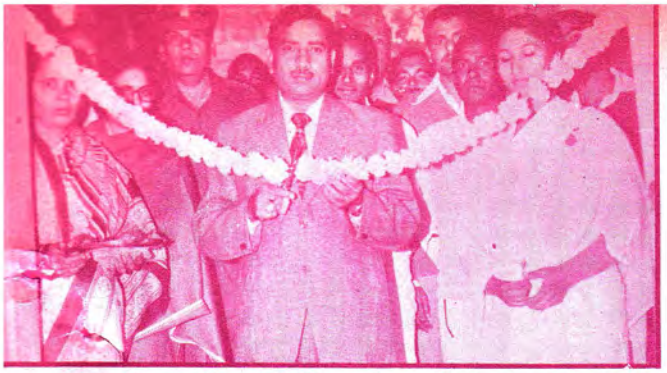

हरिद्वार में भ्राता के एन. द्विवेदी, सर्कल आफीसर युवा उत्थान प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ।

इन्डियन मेडिकल एसोसिएशन रायपुर के तत्वावधान में आयोजित 'चिकित्सा में राजयोग से लाभ' विषय पर व्याख्यान करते हुए डा.. गिरीश पटेल ।

कालेज स्कवायर, कटक स्थित चरित्र निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय का अवलोकन करते हुए भ्राता विचित्रानन्दकर, सम्पादक 'मातृभूमि दैनिक', ब्र.कु. मंजू उन्हें चित्रों की व्याख्या देते हुए ।

अम्बरनाथ (महाराष्ट्र) में राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् वहां की आर्डिनेन्स फेक्ट्री के महाप्रबंधक, ब्र.कु. शकुन्तला से चित्रों पर समझ रहे हैं ।

दरयागंज-दिल्ली में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन दृश्य ।

लखनऊ यूनिर्विस्टी डायमण्ड जुवली के अवसर पर लगाई प्रदर्शनी में ब्र.कु. भाई बहिने चित्रों पर समझा रहे हैं ।

Regd. No. 10563/65—D(E)—70

आबू पर्वत पर १८ जनवरी, स्मृति दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अपने अनुभव सुना रही हैं बहिन गायत्री मोदी जी । उन के दाएं ब्र.कु. दादी जानकी जी तथा ब्र.कु. दादी प्रकाशमणी जी विराजमान हैं ।

भुवनेश्वर सेवा केन्द्र पर, 'सम्बद' दैनिक पत्र के अध्यक्ष भ्राता सौमया रंजन पटनायक के पधारने पर ब्र.कु. सन्देशी उन्हें श्री लक्ष्मी नारायण का चित्र भेंट करते हुए ।

विराट नगर (नेपाल) में नेपाल की राष्ट्रीय पंचायत सदस्य कमल शाह, ज्ञान गोष्टी तथा प्रोजैक्टर शो देखने के पश्चात् ब्र. कु. सावित्री तथा अन्य के मध्य ।

नव निर्वाचित ससंद सदस्य भ्राता केशव राव पारधी जी के गोदिया सेवा केन्द्र पर पधारने पर ब्र. कु. मंजू उन्हें विजय का तिलक देते हुए ।

जालोर में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम में भ्राता आर.एल. गुप्ता, जिला एवं सत्र न्यायाधीश अपने अनुभव सुनाते हुए।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	आबू में तृतीय विश्व शान्ति महासम्मेलन का उद्घाटन उपराष्ट्रपति करेंगे	१
२.	विश्व-शान्ति (सम्पादकीय)	२
३.	अब वापिस घर जाना है	३
४.	शिव रात्री का वास्तविक स्वरूप	५
५.	विश्व शान्ति की स्थापना कैसे और किसके द्वारा ?	७
६.	युवा···बनो महान	९
७.	गीत	१२
८.	हिम्मतवान से माया हार मानकर भागेगी	१३
९.	एक रमणीक सैर	१५
१०.	युवको ! आगे आओ (कविता)	१६
११.	कल्पवृक्ष और हमारा जीवन	१८
१२.	अब विश्व को ऐसे युवक चाहिए (कविता)	२०
१३.	शिव परमात्मा आया है (कविता)	२१
१४.	विश्वास	२२
१५.	आर्थिक व्यवस्था के क्षेत्र में क्रान्तिकारी विचार करने वाला विश्व का अनोखा विश्वविद्यालय	२५
१६.	जीवन परिवर्तन का अलौकिक अनुभव	२७
१७.	युवा पीढ़ी राष्ट्र का विकास स्तम्भ	२९
१८.	आओ खेल खेलें	३१
१९.	आपको कितना मालम है	३१
२०.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३२

आबू में तृतीय विश्व शान्ति महासम्मेलन का उद्घाटन उपराष्ट्रपति करेंगे

ब्र०कु० ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित तृतीय विश्व शान्ति महासम्मेलन का उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति, श्री वेंकटरमन जी करेंगे। यह सम्मेलन आबू में, जहाँ कि इस संस्था का अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय है, १० से १३ फरवरी तक संस्था के विशाल हाल "ओम शान्ति भवन" में हो रहा है। जिसमें कि एक साथ आठ भाषाओं में अनुवाद की व्यवस्था है।

इस सम्मेलन में ४८ देशों से आने वाले लगभग २००० प्रतिनिधि भाग लेंगे और कई देशों के गणमान्य व्यक्ति विश्व परिवर्तन और विश्व शान्ति के विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। सम्मेलन में अन्य विषयों के अतिरिक्त वर्तमान विश्व व्यापी समस्याओं पर तथा उनके बारे में सम्यक दृष्टिकोण पर विचार किया जायेगा। तथा इस बात पर चर्चा होगी कि मनुष्य के आचार एवं व्यवहार सम्बन्धी किन परिवर्तनों से विश्व में शान्ति हो सकती है।

इस महासम्मेलन में विज्ञान, न्याय, प्रशासन, उद्योग एवं व्यापार, शिक्षा, समाचार-प्रसार, धर्म आदि विभिन्न क्षेत्रों के सुप्रसिद्ध मनीषी एवं महिला वर्ग और युवा वर्ग के प्रतिनिधि भी भाग लेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष को महत्व देते हुए इसमें युवकों सम्बन्धी विशेष कार्यक्रम भी रखे गये हैं।

इस सम्मेलन में केन्द्रीय कृषि मंत्री बूटासिंह जी, अल्प संख्यक जाति आयोग के अध्यक्ष श्री एम० एच० बेग, जो कि उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भी रह चुके हैं, केन्द्रीय रक्षामंत्री भ्राता नरसिंहाराव, भूतपूर्व न्यायाधीश वी० आर० कृष्णा अयर, भारत के कम्पट्रोलर और आडिटर जनरल श्री टी० एन० चतुर्वेदी, प्रेस ट्रस्ट आफ इन्डिया के जनरल मैनेजर श्री एन० आर० रामचन्द्रन, प्रसिद्ध

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सम्पादकीय

विश्व-शान्ति

विश्व-शान्ति के विषय पर ६ फरवरी से १३ फरवरी १९८५ तक आबू पर्वत पर जो महासम्मेलन हो रहा है, वह अपनी प्रकार का एक अनोखा सम्मेलन होगा। यों इस विषय पर भारत और भारत से बाहर अब तक कई सम्मेलन हुए हैं। उनमें कुछेक सम्मेलन किन्हीं देशों की सरकारों द्वारा आयोजित किये गए थे, अन्य कुछ किन्हीं धार्मिक संस्थाओं ने अपने आमन्त्रण पर या अन्य धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों से मिलकर आयोजित किये थे और कुछ ऐसे भी थे जो संयुक्त राष्ट्र संघ की किसी संस्था अथवा किसी विभाग द्वारा बुलाये गये थे।

धार्मिक संस्थानों द्वारा बुलाये गए सम्मेलनों में तो प्रायः सर्व धर्म समभाव अथवा सद्भावना पर ही बल दिया जाता रहा है। उनमें प्रायः यही कहा जाता रहा कि सब धर्म अपने-अपने ढंग से अच्छा ही काम कर रहे हैं और विभिन्न सम्प्रदायों को परस्पर द्वेष, वैर और वैमनस्य नहीं रखना चाहिए बल्कि शान्ति बनाए रखनी चाहिए। किसी-किसी धार्मिक सम्मेलन में आणविक अस्त्रों का प्रयोग न करने अथवा निरस्त्रीकरण करने के बारे में भी प्रस्ताव पेश किये जाते रहे हैं। इससे अधिक शायद ही किसी सम्मेलन में विश्व शान्ति की ओर कुछ क्रियात्मिक कार्य किया गया होगा। प्रायः सम्मेलन के बाद पारित किये गये प्रस्तावों की क्रियान्विति नहीं होती रही। अन्यश्च, कई धार्मिक सम्मेलनों में तो शान्ति और सद्भावना के विषय पर चर्चा करते हुए स्वयं प्रतिनिधियों ने ही सभा की शान्ति को भंग कर दिया तथा वैर और वैमनस्य का प्रदर्शन किया। न तो सम्मिलित होने वाले लोगों को पहले से अधिक कुछ शान्ति का अनुभव मिला, न उन्हें शान्ति की सहज राह दिखाई गई और न ही विश्व शान्ति के लिए कुछ विधि-विधान समझकर देश-विदेश में जन-जन में जागृति लाने के लिए वे तत्पर हुए।

कुछ सरकारों द्वारा जो सम्मेलन आयोजित किये जाते रहे, वे प्रायः राजनीतिक सम्मेलन होते थे और उनमें राजनीतिज्ञ व राजदूत वैधानिक और संवैधानिक रूप से ही देशों में दोस्ती पैदा करने, उनके सम्बन्ध संवारने इत्यादि की चर्चा करते रहे। किन्हीं देशों के बीच सीमा-विवाद या नागरिक अधिकार या वैर-विरोध उत्पन्न करने वाले किसी अन्य विषय को लेकर उनकी चर्चा की जाती रही। परन्तु उन सम्मेलनों में प्रायः हर देश का प्रतिनिधि अपने ही देश के हितों को सर्वोपरि रखकर अथवा अपने देश के सन्मान, प्रभाव-क्षेत्र अथवा सत्ता को बढ़ाने की बात को सामने रखकर बात करता रहा। राजनीति द्वारा विश्व की समस्याओं को सुलझाने के जो भी प्रयत्न किये गए, उनमें राजनीतिक दाव-पेच, पैंतड़ेबाजी, कूटनीतिज्ञता इत्यादि का जो प्रयोग किया जाता है, उससे तो समस्या कुछ समय के लिए दब-सी जाती है, उसका हल तो होता नहीं। फिर राजनीतिज्ञों को तो पहले स्वयं भी अपने मन की शान्ति की आवश्यकता है। जो स्वयं ही शान्त नहीं, वह दूसरों को क्या शान्ति देगा। यदि राजनीतिज्ञों के मन में शान्ति आ जाए अथवा उनका जीवन नैतिक मूल्यों से युक्त हो, तब तो विश्व में आज ही शान्ति आ जाए। फिर राजनीतिक कारणों से भी जो आज अशान्ति है, उसके भी मूल में तो किसी-न-किसी प्रकार की अनैतिकता अथवा अभद्रता एवं पारस्परिक व्यवहार में वैर या विरोध की विद्यमानता ही है।

पुनश्च, विश्व में अशान्ति के रूप में अभिव्यक्त हुई जो महाविकट समस्याएँ हैं, उनका एक-दूसरे से उलझा हुआ-सा गहरा सम्बन्ध है अथवा वे अन्योन्याश्रित हैं। परन्तु उन्हें हल करने के लिए

अनेक सम्मेलनों, परिसंवादों, गोष्ठियों, समितियों इत्यादि में जो चर्चा की जाती है, वह उन्हें अलग-अलग रूप में एक-एक करके सुलझाने का यत्न होता है। उन्हें एक साथ और किसी एक ही प्रभावशाली, सहज, सरल एवं स्वाभाविक विधि से हल करने का उपाय प्रायः नहीं सोचा जाता। किसी एक समस्या को आर्थिक तो किसी दूसरी समस्या को सामाजिक, तीसरी को राजनीतिक—इस प्रकार उनको अलग-अलग समझकर उन्हें हल करने के यत्न किये जाते हैं जिस कारण वे हल नहीं हो पाती। विशेष बात तो यह है कि इन सभी समस्याओं का मूल तो मनुष्य के मन ही में है। मनुष्य में प्रेम और करुणा का अभाव, उसमें सहानुभूति व सद्भावना की कमी, उसमें स्वार्थ और असहिष्णुता इत्यादि कुछ ऐसे कारण हैं जिनसे ही ये सब समस्याएँ पैदा हुई हैं। इसलिए इनका हल भी मनुष्य के संस्कार और स्वभाव के परिवर्तन से ही हो सकता है। लेकिन इस ओर प्रयत्न नहीं किये जाते रहे।

अब यह जो सम्मेलन माऊण्ट आबू में हो रहा है, उसमें इन समस्याओं का हल, मनुष्य के संस्कार और व्यवहार के परिवर्तन में ही ढूँढ़ने की चेष्टा की जाएगी। सबसे पहले तो समस्याओं के प्रति सम्यक् दृष्टिकोण अपनाया जाएगा क्योंकि गलत दष्टिकोण अपनाने से समस्या का हल कदापि नहीं हो सकता। इस सम्मेलन में प्रायः हर वर्ग के लोग सम्मिलित होकर एक साथ मिलकर इनका हल ढूँढने की चेष्टा करेंगे। और फिर उसके बाद जो निष्कर्ष सामने आयेंगे, उन्हें क्रियान्वित किया जाएगा जैसे कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित पिछले सम्मेलनों के बाद किया जाता रहा है। इन तथा अन्य कारणों से यह सम्मेलन अपनी प्रकार का एक अद्वितीय सम्मेलन है।

—जगदीश

अब वापिस घर जाना है

ब्र० कु० शकुन्तला कानोड़िया, बहल (हरियाणा)

बचपन में घर से बाहर मिट्टी के छोटे-छोटे घर बना कर हम छोटे-छोटे बच्चे खेल खेला करते थे। जैसी दिनचर्या हमारे घरों में चलती थी हम भी अपनी बाल-बुद्धि के अनुसार उन मिट्टी के घरों में वैसी ही दिनचर्या दोहराते थे। उस खेल में इतना मजा आता था कि घर जाने की व खाना खाने तक की भी सुध नहीं रहती थी। जब खेलते-खेलते शाम हो जाती थी तब घर से मम्मी या पापा की आवाज आती थी, "बेटे, अन्धेरा हो गया है। खेल खत्म करो और घर आ जाओ।" तब कहीं हमें घर जाने की याद आती थी। घर जाने से पहले हम सब बच्चे अपने बनाए हुए मिट्टी के घरों को अपने हाथों व पैरों से तोड़ फोड़ देते थे और "खीर मलाई हमने खाई, खीर मलाई हमने खाई—"यह कहते हुए घर भाग जाते थे।

अब वही घर जाने का समय फिर आ पहुँचा है। परमधाम घर से भगवान पापा का बुलावा आ गया है, "बच्चे घर नहीं चलना क्या? सृष्टि चक्र पूरा हुआ, खेल खत्म होने को है। चलो, अब घर चलो।" अब हम सब बच्चे भी "स्वर्ग की बादशाही हमने पाई, स्वर्ग की बादशाही हमने पाई"—यह कहते हुए अपने घर वापिस लौट जाएँगे।

□

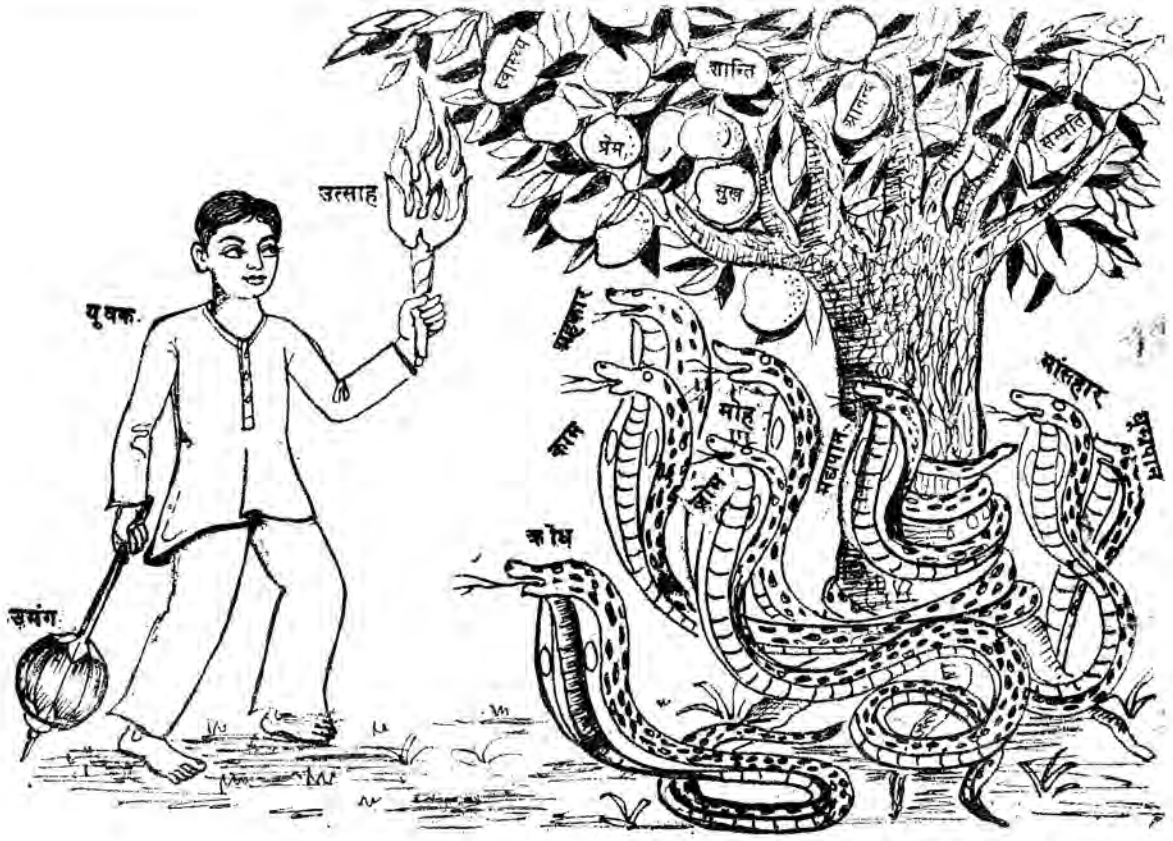

ओ यवा ! अब जाग, जीवन में उमंग और उत्साह भर, बुरे व्यसनों रूपी सांपों को मार और जलाकर सम्पूर्ण सुख, शान्ति, पवित्रता आनन्द सम्पन्न दैवी स्वराज्य का अधिकार प्राप्त कर। यदि अब नहीं तो फिर कभी नहीं।

(शेष पृष्ठ १ का)

लेखक एवं पत्रकार श्री खुशवन्त सिंह, हिन्दुस्तान के मुख्य सम्पादक श्री एम० एल० मिश्र, प्रसिद्ध उद्योगपति एवं बम्बई के शैरिफ़ श्री मोहन भाई पटेल, डिवाइन लाईफ सोसायटी के प्रधान स्वामी चिदानन्द जी, परमार्थ निकेतन, हरिद्वार के स्वामी धर्मानन्द, ऋषिकेश के स्वामी व्यासानन्द आदि भाग ले रहे हैं।

विदेश समाचार

न्यूजीलैण्ड—प्राप्त समाचार के अनुसार भारत में न्यूजीलैण्ड के नये दूतावास के खुलने पर न्यूजीलैण्ड में भारतीय राजदूत की ओर से आयोजित एक विशाल समारोह में ब्रह्माकुमारी बहनों को भी आमंत्रण प्राप्त हुआ। इस अवसर पर पार्लियामेन्ट के सभी एम० पीज़०, कैबिनेट मिनिस्टर्स एवं प्राइममिनिस्टर आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। ब्रह्माकुमारी भावना बहन ने सभी के साथ एक घण्टे तक ज्ञान की वार्तालाप की तथा सभी को ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराया। प्राइम-मिनिस्टर तथा उनकी धर्मपत्नी से १० मिनट तक ईश्वरीय ज्ञान की चर्चा चली। मुख्य कार्यक्रम में उन्हें परमात्मा शिव का बैज तथा ईश्वरीय साहित्य भेंट किया गया।

★★★ शिवरात्रि का वास्तविक स्वरूप ★★★

धार्मिक उत्सवों (त्योहारों) का निर्माण क्यों हुआ ? इस प्रश्न के उत्तर में यही कहा जाता है कि जैसा विचार वैसा व्यवहार। यदि हमारे विचार शुद्ध होंगे तो व्यवहार भी शुद्ध होगा किन्तु यदि विचार अशुद्ध हैं तो व्यवहार भी अनीतिमय और अशुद्ध होगा। व्यवहार की शुद्धि के लिए विचारों को नियन्त्रण में रखना आवश्यक है। इसकी महसूसता लोगों ने की साथ-साथ लोगों का जीवन अमर्यादित तथा उच्छृंखल न बन जाये अतएव विचारों का नियन्त्रण एव धर्म को बल देने के लिए त्योहारों का निर्माण हुआ।

अन्य कुछ लोगों का विचार है कि सामान्य प्रथा के अनुसार किसी उच्च सामाजिक कार्यकर्त्ता या महान व्यक्ति या धार्मिक व्यक्ति की स्मृति को कायम रखने के लिए उसके जन्म-दिवस या निर्वाण-दिवस को उसके अच्छे कृतियों तथा संस्मरणों के साथ मनाते हैं। उदाहरण के तौर पर पं० जवाहर लाल नेहरू को बच्चे बड़े प्रिय लगते थे अतएव उनके जन्म-दिवस को बाल-दिवस के रूप में मनाते हैं। इसी तरह पूज्य, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण तथा श्रीराम के जन्म-दिन को जन्माष्टमी तथा रामनवमी के रूप से आज भी मनाया जाता है ताकि उन पुरुषोत्तम देवी-देवताओं के कर्त्तव्यों को याद कर उनका भी जीवन वैसा ही बने। इसी प्रकार शिवरात्रि भी सर्व आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण तथा अद्भुत कर्त्तव्य की याद दिलाता है।

शिवरात्रि सभी त्योहारों में 'हीरे-तुल्य' है। इस दिन भक्तगण मन्दिरों में शिवलिङ्ग की प्रतिमा पर बेल-पत्र, दूध आदि चढ़ाते हैं तथा व्रतादि करते हैं। परन्तु इस त्योहार के आध्यात्मिक रहस्य से बहुत कम लोग परिचित हैं। वैसे एक पौराणिक कथा भी है कि एक बार एक शिकारी जंगल में शिकार करने गया और वह वहाँ हिरण और हिरणी की युगल जोड़ी पर बाण चलाने को उद्यत् हुआ ही था कि वे दोनों बोले—'हे शिकारी ! अभी तुम हमें मत मारो। हम दोनों अपने बच्चों से मिलकर कल प्रातः फिर इसी वृक्ष के नीचे मिलेंगे तब फिर आप हमारा शिकार कर लीजियेगा।" यह कहकर वे दोनों हिरण अपने बच्चों से मिलने के लिए शिकारी से विदा हुए। उन दोनों ने वापस जाकर अपने परिवार वालों से विदाई लेनी चाहिए। तो अन्य हिरणों ने कहा कि हम बूढ़े हो गये हैं अतएव हम जाते हैं क्योंकि हम पर कोई जवाबदारी नहीं है। सारे हिरण-समाज ने ही वहाँ जाने का आग्रह किया और उसके पेड़ पर पहुँचने के लिए सभी ने कूच किया। इधर शिकारी ऊपर पेड़ पर चढ़ कर पेड़ की पत्तियाँ नीचे गिराता रहा। संयोग से उस वृक्ष के नीचे एक शिवलिङ्ग था। सारी रात उपवास कर बेलपत्र चढ़ाने तथा एक युगल हिरण के पीछे सारा समाज उस पेड़ के नीचे मरने के लिए आए, इससे शिवजी बहुत ही प्रसन्न हुए। कहने का भाव यह है कि जैसे शिवजी हिरण युगल तथा शिकारी पर प्रसन्न हुए ये वैसे ही हम सब पर भी प्रसन्न हों—इसीलिए उपवास आदि करते हैं।

अब विचार करने योग्य बात यह है कि क्या इतनी छोटी सी कहानी इतने महान् त्योहार का निमित्त कारण बन सकती है। शिवरात्रि का गुह्य रहस्य क्या होगा ?—यह एक गुह्य प्रश्न है। इस गुह्य प्रश्न को समझने से ही हम शिवरात्रि के वास्तविक आध्यात्मिक रहस्य से परिचित हो सकेंगे।

परमात्मा का नाम शिव है, ऐसा तो प्रायः सभी मानते हैं। शिवलिङ्ग आकार की प्रतिमा प्रायः सभी धर्मों में पूज्य है। गोपेश्वर, रामेश्वर, अमरनाथ, नेपाल में पशुपतिनाथ, मक्का में संग-ए-असवद तथा जापान में इसी प्रतिमा रूप परमात्मा

का ध्यान करते हैं। प्राचीन काल में, रोम में प्रतिज्ञा करते समय शिवलिङ्ग का प्रतीक हाथ में लेते थे। मारीशस में आज भी शिवरात्रि एक राष्ट्रीय त्योहार माना जाता है। ईसाई धर्म वाले भी कहते हैं—परमात्मा ज्योतिस्वरूप है तथा गुरुनानक जी ने भी एक ओंकार कहकर शिव की महिमा की है। जैसे सर्व धर्मों में परमात्मा का रूप बताया है वैसे ही उनका सूक्ष्म रूप है भी। परमात्मा अर्थात् परम+आत्मा। उस परम आत्मा को हम स्थूल नेत्रों से नहीं देख सकते बल्कि उन्हें देखने के लिए साक्षात्कार अथवा ज्ञान के तीसरे नेत्र की आवश्यकता है। उनका स्वरूप अंगुष्ठाकार है। शिवरात्रि आत्मा और परमात्मा के सच्चे सम्बन्ध की याद दिलाने वाला त्योहार है।

'शिव' शब्द का अर्थ होता है—कल्याणकारी। यानि कल्याणकारी परमात्मा ने रात्रि के समय आकर आत्माओं का कल्याण किया। इसी यादगार में शिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है। किन्तु 'रात्रि' शब्द भी एक प्रतीक है। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात्रि—दोनों को मिलाकर एक कल्प होता है। दिन में आत्मायें सतोप्रधान होती हैं और रात्रि में वे तमोप्रधान बनती हैं। अतएव तमोप्रधान आत्माओं को सतोप्रधान बनाने के जो उन्होंने दिव्य कर्त्तव्य किये उसी का स्मरणोत्सव शिवरात्रि है। किन्तु शिवरात्रि के दिन एक लोटी भाँग पीने तथा व्रत रखने से हम इस त्योहार के वास्तविक रहस्य को नहीं समझ सकेंगे। इसका वास्तविक आध्यात्मिक रहस्य समझने तथा अपनी आत्मा का कल्याण करने के लिए शिवरात्रि के त्योहार का नव मूल्यांकन होना जरूरी है।

जैसे शिवरात्रि नये दिन का प्रारम्भ तथा पुरानी रात्रि के अन्त के साथ सम्बन्धित है वैसे ही हम भी अपने बीते हुए वर्ष के अन्त की नये वर्ष के प्रारम्भ से तुलना करें, मिलावें अर्थात् गत वर्ष में हमने क्या प्राप्ति को और किस को त्याग किया—? इसकी आध्यात्मिक तुलना करें तथा हिसाब निकालें। इस प्रकार शिवरात्रि का त्योहार सिर्फ़ एक दिन का नहीं बल्कि अपनी प्रगति और प्रवृत्ति को मापने का तराजू बन जायेगा। अतएव निम्नलिखित बातें विचार योग्य हैं—

(i) हममें सर्व प्रकार की श्रेष्ठता कितनी आयी ?

(ii) सम्पूर्णता के कितने समीप पहुँचे ?

(iii) दूसरे के साथ सम्बन्ध में कितनी सन्तुष्टता आयी ?

(iv) हमसे कितने सन्तुष्ट हुए ?

जैसे दीपावली के दिन व्यापारी सारे साल के नुकसान-फायदे का हिसाब निकालते हैं वैसे ही शिवरात्रि के दिन से हमें अपने आध्यात्मिक और व्यावहारिक जीवन पर दृष्टि रखकर उसे शुद्ध और श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

इस प्रकार सच्चे आध्यात्मिक रहस्य से परिचित होने के बाद हम केवल व्रत और जागरण से ही इस त्योहार को नहीं मनायेंगे बल्कि हम अपनी आत्मा को जगाकर, पाँच विकारों का त्याग (व्रत) करेंगे तो निश्चय ही हमारा कल्याण होगा और जीवन महान् बनेगा। शिवरात्रि को सिर्फ परमात्मा के कर्त्तव्य का स्मृति-दिन नहीं बल्कि उस परमात्मा से समर्थता प्राप्त करने के लिए मनायें तो हम समर्थ महावीर पाँच विकारों अर्थात् माया पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और अपने जीवन के सच्चे लक्ष्य पर पहुँच सकते हैं। इसलिए आज के दिन, हीरे-तुल्य जीवन बनाने वाले परमपिता परमात्मा शिव की हीरे-तुल्य जयन्ती पर आप सबको हार्दिक ईश्वरीय शुभ बधाई है।

विश्व-शान्ति की स्थापना कैसे और किसके द्वारा

ले० ब्रह्माकुमारी वीरबाला, लखनऊ

विश्व की दम तोड़ती राजनीति और उसमें बढ़ती हुई उलझनों को देखकर कुछ नेताओं का विचार होता है कि यदि विश्व-सरकार की स्थापना की जाय तो देशों और राष्ट्रों के बीच लड़ाई और झगड़े की सम्भावना न रहे और इस प्रकार विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। लीग आफ़ नेशन्स (League of Nations) तथा संयुक्त राष्ट्र संघ (U. N. O.) की स्थापना के पीछे कुछ इसी प्रकार की भावना थी। किन्तु देखने में यही आया है कि आज समस्त विश्व में एक सरकार क्या एक राज्य में भी एक स्थाई सरकार भी बनाना असम्भव हो रहा है।

धार्मिक नेताओं के प्रयत्नों का फल

धर्म में आस्था रखने वालों का विचार है कि यदि सब धर्म मिलकर एक हो जायें तो विश्व में शान्ति हो सकती है क्योंकि इतिहास इस बात का साक्षी है कि अनेकों युद्ध ऐसे हुए हैं जिनके पीछे धार्मिक पुट रहा है एवं धर्म के नाम पर अनेकों अत्याचार हुए हैं। कुछ समय पूर्व इंगलैण्ड की रानी मेरी (Queen Mary) ने केवल धर्मान्धता के कारण हज़ारों जीवित मानवों को आग में जलवा दिया था। आज भी पाकिस्तान को जब तब धर्म की दुहाई देते सुना जाता है (Islam in danger)। फलस्वरूप भारत-पाक विवाद अथवा छोटा-बड़ा युद्ध छिड़ता ही रहता है। इन विचारों के मानने वालों का यह भी मत है कि सारे धर्म-शास्त्रों से सार निकालकर एक सम्मिलित शास्त्र बनाया जाय जिसका नाम 'मनुष्यत्व का बाइबिल' (Bible of Humainty) हो। इन्हीं विचारों को लेकर समय-प्रति-समय सर्व-धर्म सम्मेलन भी होते रहते हैं। देखने में भी यही आता है कि हजारों, लाखों रुपये खर्च करने के बाद भी इस प्रकार के सम्मेलन विफल होते ही रहे हैं क्योंकि भौतिक बुद्धिवादी, मानव-सम्प्रदाय, धर्म के वास्तविक तत्वों और सिद्धान्तों से दूर होकर धर्म की रूप-रेखा मात्र को लेकर लड़ते मरते हैं।

अर्थशास्त्रियों के प्रयत्नों का परिणाम

अर्थशास्त्रियों का कहना है कि जनसंख्या, गरीबी एवं बेकारी ही दुःख-अशान्ति का कारण है। इसलिये यदि विश्व की अर्थ-व्यवस्था ठीक हो, निर्धनता और बेरोज़गारी न हो तो विश्व में शान्ति हो सकती है। किन्तु इससे भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता क्योंकि कुछ ग़रीब देशों की बातों को छोड़कर यदि हम इंगलैण्ड, अमेरिका-जैसे अर्थ एवं साधन सम्पन्न देशों पर दृष्टिपात करें तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मानसिक क्षोभ उन देशों में सबसे अधिक है। जब तक आध्यात्मिक प्रवृत्ति न हो, अर्थ (धन) अनर्थ बन जाता है।

समाज सुधारकों के पुरुषार्थ का नतीजा

समाज-सुधारक भी इस विषय में अनेकों मत प्रकट करते हैं। उनके विचारों में से एक यह है कि—"जब तक संसार में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना न होगी, आपसी वैमनस्य दूर नहीं होगा तब तक अशान्ति फैली रहेगी।" किन्तु 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना तब तक पैदा न हो सकेगी जब तक विश्व-पिता परमात्मा और आत्मा का सम्बन्ध बुद्धि में न बैठा हो।

वैज्ञानिकों के प्रयासों पर विचार

वैज्ञानिकों का मत है कि विज्ञान के इस युग में वैज्ञानिक साधनों के द्वारा ही सुख-शान्ति स्थापित की जा सकती है। यहाँ भी तर्क यह है कि विज्ञान मनुष्य के सुख-सुविधा के लिये भौतिक पदार्थों का निर्माण तो कर सकता है किन्तु शान्ति का सम्बन्ध मानव के मन की सूक्ष्म भावनाओं से है। शान्ति कोई ऐसा स्थूल पदार्थ नहीं है जिसे तिजोरी में बन्द करके रक्खा जा सकता है। यह एक अनुभूति है जो ज़रा-सी अरक्षा की भावना मात्र से समाप्त हो

जाती है। अमेरिका के राष्ट्रपति केनेडी की हत्या के बाद अमेरिकन राष्ट्रपति के लिये ३५ लाख रुपये खर्च करके बुलेट प्रूफ़ (Bullet-Proof) कार बनवाई गई किन्तु क्या अमेरिकन राष्ट्रपति कदम-कदम पर खतरे से भरी दुनिया में अपने को सर्वथा सुरक्षित समझकर सुखी रह सकेंगे ? कदापि नहीं !

शान्ति की स्थापना कब ?

अब प्रश्न यह उठता है कि वे निराकार परमात्मा कब आकर शान्ति स्थापित करते हैं, क्योंकि शास्त्रों के अनुसार तो यही कहा गया है कि परमात्मा युगे-युगे आते हैं अथवा २४ अवतार लेते हैं। इससे पहले कि उनका अवतरणकाल निश्चित किया जाये, हमें यह जान लेना आवश्यक है कि परमात्मा तभी अवतार लेते हैं जब अज्ञान, अत्याचार, अन्याय, दुःख, अशान्ति आदि चरम सीमा पर पहुँच चुके होते हैं, तमोगुण का बोलबाला होता है। गीता में भगवान् के महावाक्य हैं कि—"मैं अधर्म का विनाश कर सत्धर्म की स्थापना करता हूँ" अर्थात् अवतरण के बाद मानव-समाज उच्च स्थिति को प्राप्त करता है, निम्नता को नहीं। इसी कसौटी पर देखें तो सत्ययुग में परमात्मा का अवतरण नहीं हो सकता क्योंकि सत्ययुग में सुख-शान्ति सम्पूर्ण साम्राज्य है। त्रेता में भी सुख-शान्ति सम्पन्न राम-राज्य है। अब आता है द्वापरयुग। द्वापरयुग के अन्त में यदि भगवान् का अवतार मानें तो वह सत्धर्म जिसके लिये इतना भारी महाभारत का युद्ध हुआ था, दिखाई ही नहीं देता। "कृष्ण के सामने ही राजा परीक्षित के ऊपर कलियुग आया था।" कलियुग जो चारों युगों में निकृष्टतम युग माना जाता है तब क्या यह कहें कि परमात्मा ने अवतार लेकर अधर्मी कलियुग की स्थापना की ? नहीं, वास्तव में परमात्मा कलियुग के अन्त एवं सत्ययुग के संगम समय पर अवतरित होकर शान्ति के स्थापना का कार्य करते हैं जिसका प्रत्यक्षीकरण सत्ययुग और त्रेतायुग में होता है। सत्ययुग और त्रेता में दुःख और अशान्ति का नामो-निशान नहीं होता। वहाँ शान्ति के लिये किसी प्रकार के प्रयत्न अथवा घर-बार छोड़ने की आव-श्यकता नहीं रहती। स्त्री, धन, प्रवृत्ति होते हुए भी देवतायें पूर्णतः पवित्र हैं। वहाँ न कोई अरक्षा की भावना है और न कोई समस्या। कोई भी ऐसी वस्तु नहीं जो अप्राप्त हो। समस्त विश्व में पूर्णतया शान्ति होती है इसीलिये उस समय को स्वर्ग कहा जाता है।

शान्ति की स्थापना कैसे ?

अब दूसरा प्रश्न यह उठता है कि वे निराकार परमात्मा शान्ति की स्थापना कैसे करते हैं ? यह तो मैंने अभी-अभी बताया था कि परमात्मा द्वारा शान्ति के स्थापना का कार्य कलियुग के अन्त में होता है। जब सभी आत्मायें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों में पूर्णतया लिप्त हो जाती हैं तब शान्ति स्थापना का कार्य मानवों के लिये किया जाता है। अतः परमात्मा कच्छ, मच्छ, वाराह आदि योनियों में **न आकर** मनुष्यों के उद्धार हेतु साधारण मनुष्य-तन (**प्रजापिता**) का आधार लेकर अति आपत्तिकाल के समय आर्डिनेन्स निकालते हैं कि—"हे आत्माओ ! यदि सुख और शान्ति चाहते हो तो अपने जीवन को पूर्ण पवित्र तथा निर्विकारी बनाओ।" दुःख और अशान्ति का मूल कारण है ही अपवित्रता। जब तक मन, वाणी एवं कर्म द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर विजय न पाई है तब तक सुख-शान्ति प्राप्त करना एक स्वप्न है। यदि कार्य को समाप्त करना है तो कारण को मिटाना होगा, अन्यथा लक्ष्य को प्राप्त करना असम्भव है। दूसरी बात अपने को आत्मा समझकर परमात्मा को याद करना है। आत्मा तो स्वयं ही शान्ति-स्वरूप है। यदि आत्म-स्वरूप में टिकने का अभ्यास हो जाये तो शान्ति तो गले का हार है। उसके लिये दर-दर भटकने की आवश्यकता नहीं। आत्मा के साथ-साथ अपने परमपिता परमात्मा के गुण एवं स्वरूप के पहचान की भी आवश्यकता है। 'मन्मनाभव' शान्ति का एक महान् मंत्र है अर्थात् निरन्तर उस परमपिता परमात्मा के दिव्य रूप और गुणों में विचरण करते रहना तथा इस सृष्टि रूपी विशाल रंगमंच पर सदैव स्वयं को एक **पार्टधारी आत्मा** समझना। परमात्मा द्वारा बताये गये इन सहज उपायों से ही चरित्र-निर्माण हो सकता है और विश्व-शान्ति की **समस्या हल हो सकती है।**

युवा···बनो महान

ब्र० कु० सूरजकुमार, आबू पर्वत

युवा काल जीवन बगिया की वह सुन्दरतम अवस्था है जिसमें मन चाहे पुष्प उगाये जा सकते हैं। उन्हीं पुष्पों पर भावी विश्व-चमन की आधार शिला खड़ी होती है। इस काल में यदि इन बढ़ते हुए पौधों को कोई सुन्दर, सुचरित्र, विद्यावान व गुणवान माली मिल जाए तो इनकी जीवन-बगिया का सुन्दर स्वरूप समस्त विश्व को नव दिशा दे सकता है। और यदि इसी काल में इनका संसर्ग किसी कंटीली झाड़ी से हो जाए तो समस्त संसार में काँटे ही काँटे उदय होने का भय हो जाता है। उन कुमार, कुमारियों के उज्जवल भविष्य की कैसे कल्पना करें जिनका जीवन साथी स्वयं भगवान बना हो। जिनकी जीवन बगिया को खिलाने का ठेका स्वयं भगवान ने लिया हो···अब आवश्यकता है इन बन्धुओं व भगनियों को, स्वयं के विचारों को श्रीमत से संयोजित करने की। यदि कोई युवा बहन या भाई अपने विचारों को ईश्वरीय विचारों से एकीकार कर दे तो उसकी सूर्य सम चढ़ती कला को कोई भी काला बादल रोकने में सक्षम नहीं होगा।

प्रस्तुत विचारों में, हम उन अनुभव-युक्त तथ्यों पर प्रकाश डालेंगे जो कि विशेष रूप से कुमार व कुमारियों के जीवन को आलोकित करने के लिए परमावश्यक हैं। यों तो कोई भी धारणा प्रत्येक प्राणी को श्रेष्ठता की ओर ले ही चलती है तो भी यहाँ हमारा केन्द्र बिन्दु वे ही अति श्रेष्ठ व महान तपस्वी आत्माएँ हैं, जिन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने का व्रत लिया है, जिन्होंने संसार के वैभवों से मुख मोड़ लिया है और सत्य अर्थ में तो जिन्हें राज ऋषि व महान-त्यागी कहना अतिश्योक्ति न होगी। प्रत्येक कुमार व कुमारी को ये दृढ़ विचार अवश्य आते हैं कि जब सांसारिकता को त्याग दिया तो अब पूर्ण अलौकिकता से जीवन का श्रृंगार हो···जब जीवन ही दे डाला तो अब ये जीवन असाधारण हो···जब सर्व भौतिक रसों से किनारा कर लिया तो इस जीवन का प्रत्येक क्षण सुखद, आनन्दों से भरा हुआ व लक्ष्य की ओर ले जाने वाला हो। ऐसे ही स्वचिन्तन-युक्त विचार प्रत्येक आत्मा के मन में उठते होंगे। तो इसी लक्ष्य सिद्धि के लिए, आओ···जीवन का कुछ और संयमों से श्रृंगार करें।

बल के साथ बुद्धि का सन्तुलन करो

जीवन का यह काल नितान्त बलपूर्ण होता है। यह बल ईश्वरीय सेवा में सफ़ल होता है। परन्तु विशेष रूप से कुमार भाई ध्यान दें···केवल बल से ही सफलता प्राप्त नहीं होती। उसी समय बुद्धि का सदुपयोग सहज सफलता का आधार बन सकता है। इसलिए बल हमें केवल अनावश्यक जोश की ओर न बहा ले जाए, बल्कि यह बल ईश्वरीय बल के रूप में प्रख्यात हो, इसके लिए बल के साथ-साथ बुद्धि का भी सामन्जस्य कर दो।

साफ दिल बनो व तपस्वी बनो

साफ दिल का अर्थ यह नहीं है कि हम कुछ भी समा न पायें, जो अन्दर हो वही बाहर कर दें—यह भी भोलेपन का ही प्रतीक है। हमारा साफ दिल अर्थात् कोई भी बात मन में विघ्न रूप हो, उसे ज्ञान के सागर में डाल दें। इसका अर्थ यह भी नहीं कि हम जहाँ चाहें अपनी हर बात सुना डालें। परन्तु वहाँ सुनायें, जहाँ सुनने वाले हमारी बात को समाकर हमें यथार्थ समाधान दें। उनका दृष्टि कोण भी हमारे प्रति प्रेम व शुभ-भावनाओं

से भरा हो। कुमार भाई विशेषतया अपनी समस्याओं का समाधान अवश्य लें।

और सदा अपने को तपस्वी समझें, कुमार या कुमारी नहीं। 'हम तपस्वीं हैं', यह संकल्प हमें रुहानियत की ओर ले चलता है। अपने को महान तपस्या के पथ पर मानने से जीवन से बनावट, दिखावा, आकर्षण व चंचलता समाप्त हो जाती है और जीवन त्याग व वैराग्य की भावना से तेजोमय हो उठता है। परन्तु हम वनवासी नहीं हैं। हमने वनवास नहीं लिया बल्कि हमारे रावण की जेल के वनवास के दिन पूरे हुए। अत: हमारे जीवन में वैराग्य भी हो और सम्पूर्ण ईश्वरीय आनन्द भी।

प्यार की भूख समाप्त करो

अपने लौकिक कार्यों से निवृत होकर युवक जब घर लौटते होंगे तो अवश्य ही कभी-कभी उन्हें जीवन की नीरसता, व अकेलेपन का आभास होता होगा। कमरे की दीवारें उन्हें भयावह लगती होगी, मूक कमरा उन्हें सूनेपन का साक्षात्कार कराता होगा और उस समय मन में प्रेम की प्यास उठती होगी, जीवन में रस भरने के साधनों की आवश्यकता महसूस होती होगी, यह सत्य है, इसमें आप दोषी नहीं हैं।

परन्तु बन्धुओं··· तुम तो शेर हो, शेर बने रहो। शेर अकेला ही राजा की तरह काँटों के जंगल में विचरता है। तुम भी इस माया के कटीले जंगल में शेर की तरह निर्भय होकर विचरो। यह प्यार की भूख अकेलेपन की भासना का प्रतिबिम्ब है। तुम भिखारी तो नहीं हो। प्यार के सागर के बच्चे व उसके मित्र हो, उसके पुनीत प्यार से स्वयं को तृप्त करो। मनुष्यों का प्यार, सुखदाई नहीं होता। अनुभव की बात है कि तुम्हारा परमपिता तुम पर अथाह प्यार की बरसात कर रहा है, सतत उसमें स्नान करते रहो।

जब भी कार्य से घर लौटते हो तो रास्ते में बाबा से रूहरिहान करते चलो और जब घर आओ तो आते ही ज्ञान-अमत से स्नान करो अर्थात् अव्यक्त मुरली पढ़ो। इससे मन रस से भरने लगेगा।

भगवान को दोस्त बना लो

जब भी घर में अकेलेपन से स्वयं को पीड़ित देखो तो अपने उस परम मित्र को बुलावा भेजो··· "आओ बाबा, मेरे पास, मैं अकेला हूँ। अव्यक्त रूप में आओ, मुझे बहलाओ, तुम मेरे सच्चे मित्र हो।" आप पाओगे, परम मित्र सम्मुख है और बहलाओ उससे अपना मन···यदि एक दो बार ये अभ्यास कर लो तो मन प्रेम से ओत-प्रोत हो उठेगा और आप प्यार के भूखे नहीं, प्यार के दाता बन जाओगे।

यह भी तो मात्र एक संकल्प ही है कि मैं अकेला हूँ। भगवान ने स्वयं कह दिया, "मैं तुम्हारे साथ हूँ"। उसने असत्य तो नहीं कहा होगा। उसके साथ को स्वीकार करो तो सर्व समस्याओं का निदान हो जायेगा।

व्यस्त जीवन से भारी मत बनो

"Busy life is the best life" अर्थात् व्यस्त जीवन ही सर्वश्रेष्ठ जोवन है···व्यस्तता ही कुमार कुमारियों की रक्षक है। इसलिए कभी यह सोचो भी नहीं कि हम व्यस्त न रहें, खाली रहें। खाली रहकर देख लो, परेशानियाँ बढ़ेंगी, माया बढ़ेगी, व्यर्थ भी बढ़ेगा और खुशी भी जाती रहेगी। अत: स्वयं को व्यस्त करो परन्तु हाँ, केवल लौकिक प्राप्तियों के पीछे नहीं। लौकिक व्यस्तता तो व्याकुलता की जन्म दात्री है। लौकिक में सरलता, अलौकिक में व्यस्तता हो।

और फिर ड्यूटी को डाँस समझो। कार्य को नृत्य समझो···प्रत्येक कार्य को खेलते खेलते, आनन्दों में कर जाओ, भारी मन से नहीं, सरल मन से··· बाबा की यादों के गीत गाते गाते। जब हर बात को खेल समझेंगे तो व्यस्त घड़ियाँ ही आनन्द कारिणी बन जायेंगी। अर्थात् Busy life Be easy कर दो।

जीवन में सन्तुलन लाओ

जीबन में मात्र किसी एक ही बात को पकड़कर

चलना घातक होता है। अतः जीवन सन्तुलित हो अर्थात् जीवन में सर्व रस हों, सर्व अनुभव हों। अतः व्यवहारिक भी बनो, दूसरों के सम्पर्क में स्नेह व सम्मान का भाव भी भरो, दूसरों को हमारा जीवन सूना या सूखा न लगे। हम अलिप्त भी रहें और घलें मिलें भी। हम संन्यासी भी न बन जाएँ और अनुरागी भी न। इसी प्रकार जीवन में केवल सेवा ही सेवा के पुष्प न खिलायें, उनमें ज्ञान-योग की सुगन्धी भी भरें। अर्थात् जीवन में चारों विषयों का व सर्व धारणाओं का सन्तुलन लाने से जीवन रूहानी आकर्षणमय बन जाता है।

भोजन पर ध्यान दो

जो भाई व बहनें स्वयं भोजन बनाते हैं, वे ध्यान दें कि योग-युक्त भोजन बनाने से व योग-युक्त होकर सेवन करने से आत्मा कम से कम ५०% पावन बन सकती है। अतः इस प्रतिदिन के २ या ३ घण्टों को विशेष रूप से योग तपस्या का समय ही समझ। यह संकल्प रखकर कि हमारे परम सद्गुरु ने यह २-३ घण्टे की योग भट्ठी प्रतिदिन के लिए निश्चित की है—इसका उपयोग कर। तो यह समय अति बलदायक होगा। इस समय को महत्व को पूर्ण पूर्ण दें। जीवन में एक अभ्यास करके देखें—"भोजन ऐसे खायें जैसे अव्यक्त बाप-दादा भोजन खाते हैं"। योग-युक्त भोजन से हृदय शुद्ध हो जाता है। अतः इस तपस्या को मन से स्वीकार करें।

तन, मन व धन के उपयोग पर ध्यान दो

कुमार, कुमारियों का तन, मन धन, ईश्वरीय सेवा में ही लगे। यह उनकी उन्नति का सर्वश्रेष्ठ आधार है। युवा वर्ग स्वर्ग बनाने के ईश्वरीय कार्य के स्तम्भ हैं। उनकी स्वच्छ व विकासशील बुद्धि पर स्वयं ईश्वर को भी गौरव है। अतः इन ३ शक्तियों का दुरुपयोग न हो। ये ३ शक्तियाँ किसी नये कर्म-बन्धन का निर्माण न करें। यह ध्यान देने योग्य विषय है परन्तु इसमें भी सन्तुलन रखना न भूलें और विवेक से काम लें।

बड़ों का प्रेम व शुभ-भावनाएँ जीतें

जीवन की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि कुमार-कुमारियाँ अपने बड़ों का अर्थात् जिन्होंने जीवन में महान त्याग व तप किया है, जिनका जीवन वरदानों से भरपूर है, उनका आशीर्वाद व पुनीत प्रेम जीतें···अपने किसी भी अशुभ शब्द से, अयथार्थ व्यवहार से, उनकी शुभ-दृष्टि से दूर न जाएँ। उनका स्नेह व आशीर्वाद हमें माया-जीत बनने का बल देता है, हमें ईश्वरीय परिवार का आभास कराता है व जीवन में अकेलेपन की दुविधा से मुक्त कराता है।

बड़ों से बहस न करें

हमें यह श्रेष्ठता व महानता जीवन में सिद्धान्त रूप से अपना लेनी चाहिए कि हम अपने बड़ों से व्यर्थ की बहस में न उलझें। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि हम अपनी सत्य बात भी न कहें लेकिन सत्य को कहकर न्यारापन अपनाएँ। हमारी व्यर्थ की बहस समस्याओं को उलझा देती है। बड़ों के स्नेह व शुभ-भावनाओं से दूर कर देती है। अतः न तो हमें जीवन में भयभीत होकर रहना चाहिए, न सत्य को आँखों से ओझल करना चाहिए और न ही बहस की वृत्ति अपना कर अपनी शक्तियों को नष्ट करना चाहिए।

अपनी गलती सहज व सहर्ष स्वीकार करें

अपनी गलतियों को स्वीकार करना—स्वच्छ दिल, निर्मल मन, निर्भयता व महानता का प्रतोक है। गलती स्वीकार करने से, 'लोग हमें क्या कहेंगे' यह सोचना अल्पज्ञता है। स्वयं की गलती स्वीकार करने से आप दूसरों के दिलों में स्थान पा सकोगे। भूल स्वीकार करना भूल सुधार का उत्तम साधन है। यदि दूसरों के समक्ष भूल मानने में तुम्हारे मन को ठेस पहुँचती है तो कम से कम अपने मन में तो अपनी भूल मान लो। अपनी भूल स्वीकार करना आपके मन में एक अजीब से सुख की अनुभूति करायेगा और आप सतत आगे बढ़ते रहेंगे!

मनमौजी मत बनो, जिद्दी भी न बनो

शिव परम पिता ने हमें मस्त योगी अवश्य बनाया है, परन्तु मनमौजी नहीं। उनकी याद में हम मस्त अवश्य हो जाएँ। परन्तु जब जो चाहे करने लगें, किसी की एक भी न सुनें—वह मनमौजी स्वभाव महान आत्माओं का लक्षण नहीं है। ऐसा स्वभाव हमें दूसरों के विश्वास व सहयोग से दूर ले जाता है। और जिद्दी होना सिवाय अल्प बुद्धि के और कुछ भी नहीं। अल्प बुद्धिवश कई लोग जिद्द को ही दृढ़ संकल्प मानकर अडिग हो जाते हैं। परन्तु जिद्द दृढ़ता नहीं कमजोरी है, श्रेष्ठता नहीं निम्नता है, हमारी शोभा नहीं अशुभ लक्षण है और सगठन में विघ्न रूप बनने वाली महान बीमारी है। अतः कुमार, कुमारो इस बीमारी से दूर चलें···सरल चित्त बनें···और दिव्यता से स्वयं को सम्पन्न करें।

टकराव की अग्नि में न जलें

परस्पर टकराव की अग्नि जो कि घृणा व वैमनस्य पैदा करती है, मानव-जीवन भक्षिणी है। क्योंकि टकराव में उलझा मन कभी एकाग्र नही हो सकता और न उसे परम शान्ति व सन्तोष मिल सकता। और यही संस्कार कुमार कुमारियों को लक्ष्य से विचलित कर देता है। अतः इसे अग्नि समझकर हर कीमत पर इससे बचें।

टकराव संगठन में बिखराव लाता है, बुद्धि के टुकड़े-टुकड़े कर डालता है, जीवन का शृंगार बिगाड़ देता है और अन्ततः ईश्वरीय परिवार व ईश्वर के प्रति भी अलगाव व नीरसता की भावना पैदा कर देता है। स्वयं ही अपने मार्ग में काँटे मत बोओ क्योंकि तुम्हें तो जीवन को महकता चमन बनाना है।

अतः हे महानता के पथ के तपस्वी राहियों··· तुम यहाँ अलौकिकता से जीवन का शृंगार करने आये हो···तुम छोटे नहीं हो, अति महान हो···तुम नर नारी नहीं, योगी व योगिनी हो···तुम कमजोर नहीं शेर शेरनी हो, उठो, अपनी हीन भावनाओं को सागर में फेंक दो···अपनी शक्तियों को पहचान कर स्वयं में आत्म विश्वास जागृत करो। तुम्हें तो संसार बदलना है···तुम्हें विश्व प्रेरक बनाना है··· तुम ही तो भावी स्वर्ग के होवनहार कर्णधार हो··· तुम अपनी शक्तियों को छोटी-मोटी बातों में नष्ट करने नहीं आये हो···तुम तो शक्ति सम्पन्न बनकर रावण का अन्तिम संस्कार करने आये हो अतः महान बनो और योगी बनकर समस्त विश्व का मार्ग-दर्शन करो।

गीत

ले०—ब्र० कु० मोहन

तेरे ज्ञान की अमृत धारा, भाग्य बनाये हमारा
शिव बाबा तेरी श्री मत से, चमके आत्म सितारा
कभी तू होता निराकार तो कभी होता साकार
कभी आकारी रूप में देता, परम अलौकिक प्यार
तीनों रूप से मिलता तुझसे, अखुट ज्ञान भण्डारा
तू जब धरती पर आये तो, धर्म की होती जीत
सभी धर्म ब्रह्मा तन द्वारा, करते तुझको प्रीत
रुहानी प्रीत की रीत निभाने, तू धरा पे पधारा
तेरे योग की प्रेम ज्वाला, मैल मिटाये मन के
तेरे गुणों की पहन के माला, नर से नारायण बनते
तेरी दिव्य सी चितवन से, मिलता सर्व सहारा

हिम्मतवान् से माया हार मानकर भागेगी

ले०—ब्र० कु० चक्रधारी, शक्ति नगर, दिल्ली

शेर जंगल का राजा माना जाता है। वह बड़ा शक्तिशाली होता है और स्फूर्ति सम्पन्न भी। ऐसे ही एक शेर के बारे में एक छोटी-सी कहानी प्रसिद्ध है। कहते हैं कि एक शेर बारी-बारी जंगल के पशुओं को खा जाता था। एक बार एक लूमड़ ने सोचा कि हिम्मत से काम लेना चाहिए। उसने एक रंगरेज़ (कपड़ा रंगने वाले) की दुकान में जाकर रंग से भरे कुंड में डुबकी लगा ली। इससे उसकी शक्ल-सूरत बदल गई। वह लाल-लाल चमकता हुआ-सा दिखाई देने लगा—ऐसा कि जिस जैसा और कोई जीव उस जंगल में नहीं था।

फिर मन को मजबूत कर वह उस गुफ़ा के द्वार के बाहर जाकर बैठ गया जिसमें शेर रहता था। उसको मालूम था कि शेरे घूम फिर कर लौटकर इसी गुफा में आता है। उस दिन जब शेर लौटा तो उसने दूर से देखकर यह सोचा कि यह तो कोई ऐसा प्राणी बैठा है कि जैसा मैंने जंगल में पहले कभी नहीं देखा। न इसके चेहरे पर कोई डर के चिह्न हैं न मुझे आते देखकर इसको कोई कंपकपी हो रही है; न कोई भागने की चेष्टा व्यक्त हो रही है और न ही यह मूर्छित हो रहा है। उसे अचम्भा हुआ कि यह तो चित्रमय होता हुआ भी विचित्र है। यह जंगल में रहता हुआ भी मुझसे नहीं डरता। यह कैसा जीव है!

शेर आगे बढ़ा, थोड़ा और अधिक निकट पहुँचा तो उसने देखा कि अभी भी यह भयभीत नहीं हो रहा और यह पहचानने में भी नहीं आ रहा कि यह कौन है! आखिर उसने पूछ ही लिया—"तुम कौन हो?"

लूमड़ ने जवाब दिया—"मैं हूँ सवा सेर।"

यह सुनकर स्वयं शेर का ही मन दहल गया। वह सोचने लगा कि मैं तो केवल शेर (सेर) हूँ और यह है सवा सेर (सवा शेर)। अतः वह वहीं से मुड़कर वापस जाने लगा।

जब वह कुछ आगे निकल गया तो रास्ते में वृक्ष पर बैठा एक बन्दर उस पर हँसने लगा। शेर ने ऊपर मुँह करके देखा और पूछा—"अरे भई, तुम हँसते क्यों हो? तुम जंगल के राजा पर हँसते हो? आज क्या बता है?"

बन्दर बोला—"जंगल के राजा होकर आज आपके साथ जो कुछ हुआ, उसी पर तो मुझे हँसी आ रही है।"

शेर बोला—"हुआ क्या? किस बात पर हँसी आ रही है?"

बन्दर बोला—"आज आप एक छोटे-से प्राणी से डरकर वापस लौट पड़े। आप में इतना बल है और फिर भी आप एक छोटे-से जीव से डरकर अपना स्थान छोड़ इधर को लौट आए। क्या यह हँसी की बात नहीं है?"

शेर बोला—"वह छोटा-सा थोड़े ही है, वह तो सवा सेर है और मैं तो केवल शेर (सेर) हूँ।"

बन्दर बोला—"महाराज, वह तो कुछ भी नहीं

है। चलिए, मैं चलता हूँ आपके साथ। आगे-आगे मैं चलता हूँ और आप बेशक मेरी पूँछ पकड़ कर चलें।" इस प्रकार बन्दर ने शेर के मन में विश्वास पैदा किया और अपनी पूँछ उसके मुँह में देकर गोया अपनी ज़मानत दी।

अब आगे-आगे बन्दर चल रहा था और उसके पीछे-पीछे, उसकी पूँछ मुँह में लिए हुए शेर। चलते-चलते जब वे लूमड़ के निकट पहुँचे तो लूमड़ ने बन्दर से कहा—"शाबाश, तुम आ गए। तुमने अच्छा किया। जो शिकार मेरे हाथ से निकल गया था, उसे तुम युक्ति से यहाँ ले आये। सवा सेर के सामने तुम सेर (शेर) को ले आये। ठीक है, आज हम दावत करेंगे।"

यह सुनकर शेर घबरा गया। उसने सोचा कि बन्दर मुझे चालाकी से ले आया है। उसे बन्दर के प्रति क्रोध आया। उसने तुनका देकर बन्दर की पूँछ को झटके से अलग कर दिया। बन्दर भागा एक ओर और शेर भागा वापस दूसरी ओर। और लूमड़ बैठा हँसने लगा।

बच्चो, इसी प्रकार यह कलियुगी संसार एक जंगल है। माया इस जंगल का राजा है। वह कभी एक कभी दूसरे पर वार करती ही रही है और उन्हें कच्चा ही खा जाती रही है। अब जो आत्माएं साहस कर स्वयं को ज्ञान के रंग में रंग लेती हैं तो उनकी सूरत व सीरत ही बदल जाती है। वे बाकी सब जीव-प्राणियों को अलग से प्रतीत होते हैं। वे माया से नहीं डरते बल्कि माया को सेर व स्वयं को सवा सेर मानते हैं। माया उनसे डर कर भाग जाती है। वे स्वयं को ईश्वर की सन्तान मानते हैं जिससे उनका मनोबल बढ़ जाता है और ५ विकारों रूपी बन्दर जो माया रूपी शेर को बहाने बनाकर लाने और डराने का यत्न करता है, वह अपनी पूँछ भी गँवा बैठता है इसलिए बाबा कहते—"ज्ञानवान बच्चे माया की 'पूछ-पूछ' भी निकाल देते हैं और जब वे ईश्वरीय नशे में रहते तथा हिम्मतवान बनते हैं तब माया हार मान भाग जाती है। यदि माया शेर (सेर) है तो आप स्वयं को सर्व शक्तिमान परमात्मा की सन्तान समझ सवा सेर समझो!' □

एक रमणीक सैर (शेष पृष्ठ १५ का)

टेबल पर झुकी गहन अध्ययन में खोई हुई थी। अचानक उसने आँखें उठाई और मैंने देखा दो मोटे-मोटे आँसू उसकी गालों पर लुढ़क पड़े। उसके होंठों से निकलती आहें मुझे स्पष्ट सुनाई दे रही थीं— 'हे भगवान् तूने मुझे क्यों बनाया लड़की? कितने दुःख हैं नारी चोले में? आज तक आँखें फोड़-फोड़ कर जो पढ़ी हूँ उसका क्या यही परिणाम है? क्या यही कि शादी करो, बच्चे जन्मो, घर परिवार पति की दासी बनकर रहो, और एक दिन चुपचाप दुनिया से चले जाओ। क्या यही जीवन का सार है? क्या और कोई रास्ता नहीं है? क्या कहा? शादी नहीं करूँ? क्या यह दुनिया, यह समाज मुझे टिकने देगा? हे भगवान मुझे कोई रास्ता दिखाओ।"

यह सब दिखाकर बाबा ने मेरी अँगुली छोड़ दी। पर मेरे सामने हड्डियों के कंकाल रोगी, दर्शनों के प्यासे भक्त और नई मंजिल, नए रास्ते के लिए आहें भरती उस कन्या की तस्वीरें घूमती रहीं? एक आवाज आई क्या तूं इन दुःखी आत्माओं को सुखी नहीं बनाएगी? और मैं बाबा को याद करने बैठ गई। बाबा भी मुस्कुराता हुआ चला गया। उनकी युक्ति सफल जो हो गई थी। □

विश्वास (शेष पृष्ठ २४ का)

अनीता—आशा बहिन, आज मुझे ऐसा लग रहा है कि आपके माध्यम द्वारा उस परम विश्वसनीय परमात्मा ने हमारे निराश मन में आशा की किरणें जागृत कीं। अब तो हम अवश्य आपके साथ आबू चलेंगे। ○

एक रमणीक सैर

ब्र० कु० उर्मिला

आज सुबह-सुबह बाबा ने मुझे ३ बजे जगा दिया। मैंने कहा—"बाबा सोने दो ना, उठ जाऊँगी। बड़ी मीठी-मीठी नींद आ रही है। रात को देर से सोई थी, इसलिए आँखें बन्द-बन्द हुई जा रही हैं।" बाबा ने भी देख लिया बच्ची यूँ मानने वाली नहीं है, इसके लिए कोई युक्ति अपनानी पड़ेगी। बाबा ने धीरे से मेरे माथे को सहलाया और कहा—"अच्छा सोई रह, बाबा सैर करने जा रहा है, साथ नहीं चलना ?" अब मैं दुविधा में फंस गई। नींद भी प्यारी लगे और बाबा के साथ सैर करना और भी अच्छा लगे। इसलिए मैंने कहा "बाबा आप मेरी ऊँगली पकड़ लो। मैं आँखें बन्द किए-किए नींद भी करूँगी और आपके साथ सैर भी।"

बाबा ने मेरी बात मान ली और सर्वप्रथम मुझे एक आलीशान महलनुमा मकान में ले गए। इसके खिड़की और दरवाज़ों पर रंग-बिरंगे परदे लगे थे। चारों तरफ लगे शीशों में से प्रकाश छन-छन कर अन्दर जा रहा था। बाहर रंग-बिरंगे पेड़-पौधों के झुरमुट में मासूम-मासूम, सलोने-सलोने बच्चे क्रीड़ा कर रहे थे। रंग-बिरंगे पंछी हरे-हरे पेड़ों की घनी डालों पर और हरे घास के मैदान में मस्ती से फुदक रहे थे। बाहर एक छोटे से तालाब में रंग-बिरंगी मछलियाँ मन को लुभा रहीं थीं। गेट पर बंधे कुत्त के बदन से इत्र की खुशबू आ रही थी। यह सब देखकर मैंने अपनी अधखुली आँखें पूरी खोल लीं। मुझे लगा बाबा मुझे स्वर्ग में ले आए हैं। पर अगले ही क्षण मैं इस माया नगरी के भ्रम जाल को समझ गई। बाबा मुझे इसी मकान के एक अलग से बने कमरे में ले गए जहाँ एक बहुत बड़े पलंग पर डनलप के गद्दे बिछे हुए थे। पर उन गद्दों पर सोने वाला हड्डियों का कंकाल करवटें बदल रहा था। कई रातों से न सोने के कारण उसकी आँखों के डोरे लाल हो गए थे। सिरहाने दवाइयों का ढ़ेर पड़ा था पर दुआएँ न थीं। असहनीय बेचैनी की हालत में उसके होंठ कुछ-कुछ बुदबुदा रहे थे—"हे भगवान, यह जीवन किस काम का, इस धन दौलत का क्या फायदा ? इससे अच्छा तो तू मुझे गरीब बना देता पर निरोगी काया दे देता। हे दयालु ! सबके दुःखों को दूर करने वाले मुझे इस दुःख से छुड़ा।"

उसकी बुदबुदाहट अभी मेरे कानों में हो थी कि मैं एक सजे सँवरे मन्दिर में पहुँच गई, भक्तों की महफ़िल लगी थी, शायद किसी देवी का जगराता था। सभी मस्ती में झूम-झूम कर गा रहे थे। पर उन्हीं भक्तों में एक निराला भक्त था जो हिरासत भरी नज़रों से देवी की तस्वीर की तरफ़ हो देखे जा रहा था। आशा और निराशा के भाव उसके चेहरे पर आ जा रहे थे। आखिर वह मण्डली में से उठकर देवी की मूर्ति के पास जा बैठा। उसका चेहरा पीला हो गया था, आँखों के नीचे काले गड्ढे पड़ गए थे और चलते हुए टाँगे लड़खड़ा रहीं थीं। भक्तमण्डली गाए जा रही थी—"अब तो आजा दर्श दिखा जा" और वह निराला भक्त इसी दर्श की आशा लिए देवी के आगे माथा रगड़ रहा था। ८ दिन से इसने खाना नहीं खाया था। आज शायद उसकी इच्छा पूर्ण होने की आखरी रात थी। अत्यन्त दयनीय भाव से वह देवी के आगे ओंधा लेट गया और धीरे-धीरे मन के भाव प्रकट करने लगा—"माँ, क्या आप मेरी आवाज सुन नहीं रही हैं, क्या मैं आपका बच्चा नहीं हूँ ? मैंने आपसे एक क्षण के लिए दर्शन ही तो माँगा है, क्या मेरी यह इच्छा कभी पूर्ण न होगी, क्या मैं इसे साथ लिए-लिए ही तन छोड़ दूंगा। आप तो दयालु कृपालु हैं, क्या मेरे ऊपर आपकी दयादृष्टि कभी भी नहीं होगी ?"

मैं उस भक्त की बेचैन अवस्था के बारे में सोच ही रही थी कि बाबा मुझे साफ सुथरे एक छोटे से कमरे की खिड़की के पास ले गए। कमरे में गहन शान्ति छाई हुई थी। २० साल की एक कन्या

(शेष पृष्ठ १४ पर)

युवको ! आगे आओ

(अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष पर विशेष युवकों के प्रति ईश्वरीय सन्देश

ब्र० कु० सूरज प्रकाश, सहारनपुर

भगवान करे आह्वान तुम्हारा अब न देर लगाओ
जग को नयी रोशनी देने युवको आगे आओ

(१) ओ शक्ति के स्त्रोत तुम्हीं से नयी क्रान्तियाँ आईं
भूले हुए समाज ने तुमसे नतन राहें पाईं
तुम्हारे पौरुष, तप और त्याग से नूतन गीत सजे हैं
तुम्हारे मन की वीणा पर क्रान्ति गीत बजे हैं
अपने आदि दिव्य संस्कार फिर से जरा जगाओ
जग को नयी रोशनी देने युवको आगे आओ

(२) ओ शिव बाबा के लाल पकड़ लो हाथ क्रान्ति का ये पथ
हाथ प्रभू का न छोड़ेंगे आज लो ये शपथ
विचलित कर सके न किन्चित तुमको कंचन कामिनी
तुम्हें दीन और दुखिया की नौका होगी थामनी
ऐसे कर्म कभी न करना जो पीछे पछताओ
जग को नयी रोशनी देने युवको आगे आओ

(३) दुखी है आज हर इन्सान परेशाँ कई ज़मानों का
नहीं अब वक्त बाकी है आलस और बहानों का
उठो रुख फेर दो तुम बढ़ते माया के तूफानों का
बनना है तुम्हें मालिक अब दोनों जहानों का
विश्व में शान्ति लाने को क्रान्ति का बिगुल बजाओ
जग को नयो रोशनी देने युवको आगे आओ।

(४) माना है पथ में कठिनाइयाँ, विरोध और हैरानी
किन्तु युवकों के पौरुष ने कभी हार क्या मानी ?
अन्धकार से लड़ना है यह युवा धर्म उद्घोष
बेहोश जो हैं अज्ञान नींद में देना उनको होश
अपना तन मन धन और शक्ति सेवा में लगाओ
जग को नयी रोशनी देने युवको आगे आओ

(५) संगम युग कमाई का युग हम और न अब आराम करें
दो युगों के लिये सृष्टि से माया का काम तमाम करें
अमृत बाँटें सकल विश्व को ज्ञान धन का दान करें
भगवान आये हैं भारत में डंके की चोट ऐलान करें
बाप की प्रत्यक्षता का झंडा जग में अब फहराओ
जग को नयी रोशनी देने युवको आगे आओ

ब्यावर सेन्टर पर राजस्थान हाईकोट के न्यायाधीश भ्राता कृष्ण गोपाल शर्मा जी पधारे, पास में बैठे हैं भ्राता शिवदत्त राय शर्मा, ब्र० कु० गंगा, अनुराधा एवं रजनी।

कटक में ब्र० कु० कमलेश जी आध्यात्मिक संग्रहालय में कुछ मुख्य पुलिस अधिकारियों व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों से ज्ञान चर्चा करते हुए।

यह चित्र विजयबाड़ा सेवाकेन्द्र के 'द्वितीय वार्षिकोत्सव' के उपलक्ष में रखे कार्यक्रम का है। ब्र० कु० नरसिंहाराव सर्विस रिपोर्ट सुना रहे हैं।

नामरूप में देव मन्दिर में प्रदर्शनी लगाई गयी जिसका उद्घाटन एच० एफ० सी० के चीफ़ एक्जीक्यूटिव फीता काट कर कर रहे हैं।

नेपाल सोवियत सांस्कृत संघ के हाल में प्रदर्शनी का समापन, स्वास्थ्य सहायक मंत्री बहन विद्या देवी देवकोटा द्वारा हुआ।

कल्पवृक्ष और हमारा जीवन

ले०—ब्रह्माकुमारी सुधा, शक्ति नगर दिल्ली

हमारे प्यारे बाबा को ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर बने हुए सब चित्रों में से 'कल्प वृक्ष' का चित्र अति प्रिय था। उसके मूल रूप से दो कारण हैं—एक तो यह कि इस चित्र से संसार के मुख्य धार्मिक तथा राजनैतिक वंशों के आदि-मध्य-अन्त का सारा इतिहास ज्ञात होता है क्योंकि इसमें सत-युग के आदि से लेकर कलियुग के अन्त तक की कहानी स्पष्ट रूप से चित्रित की गई है। परन्तु न केवल ज्ञान के कई गहन रहस्यों को यह चित्र स्पष्ट करता है अपितु इसकी विस्तृत जानकारी होने तथा उसकी गहराई में जाने से मानव के जीवन में कई नैतिक मूल्यों का विकास भी होता है। यही दूसरा कारण है जिसकी वजह से बाबा को यह चित्र अति प्रिय था। बाबा समय प्रति समय ज्ञान-मुरलियों में उन मूल्यों की चर्चा करते हुए सबका ध्यान उस ओर खिचवाया करते। इसी दूसरे पहलू को सामने रखते हुए हम यहाँ कुछेक दिव्य धारणाओं की चर्चा करेंगे जो हमें कल्प वृक्ष की व्याख्या पर मनन करने से प्राप्त होते हैं।

एकता, आपसी स्नेह और सद्भावना

इस कल्प वृक्ष के तने की ओर जब दृष्टि जाती है तो विचार चलता है कि इन दोनों युगों में सृष्टि पर एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा और एक मत थी। वह ऐसा समय था जहाँ के लिए गायन है कि वहाँ शेर और बकरी भी एक घाट पर जल पीते थे। सर्व गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी देवी-देवताओं का राज्य सुख, शान्ति और खुशहाली से भरपूर था। आपसी मत भेद, झगड़े आदि का तो प्रश्न ही न था। अत: ऐसे विश्व का चित्रण हमारे मन में आपसी प्रेम की भावना जागृत करता है। जबकि वहाँ पर पशु भी इतने प्रेम से विचरण करते थे तो मनुष्यों में कितना न स्नेह होगा। एक मत अर्थात् एकता होने के कारण द्वन्द्व और क्लेश न थे—यह जानकारी हम सबको परमात्मा ही की एक 'श्रीमत' पर चलने की प्रेरणा देती है ताकि हम भी अपने जीवन को सुख, शान्ति और खुशी से भरपूर कर सकें।

धीरज, सहनशीलता और शान्ति

कल्प वृक्ष भली-भाँति इस बात को स्पष्ट करता है कि मनुष्य सृष्टि में विविधता और विभिन्नता है। जैसे किसी भी वृक्ष का एक पत्ता दूसरे पत्ते से हूबहू नहीं मिलता, ऐसे ही मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष में भी एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से नहीं मिलता। आत्मायें अनादि काल से एक-दूसरे से भिन्न हैं। अत: किन्हीं दो व्यक्तियों में पूर्णत: समानता हो ही नहीं सकती। इस रहस्य को जानने से, जब कभी हम देखते हैं कि किसी दूसरे व्यक्ति का विचार हमारे विचार से नहीं मिलता अथवा उसकी बात अटपटी-सी प्रतीत होती है, हम साक्षी होकर उस व्यक्ति का पार्ट देखते रहते हैं। हममें धीरज, सहनशीलता और शान्ति का गुण कायम रहता है। क्योंकि हम समझ गए हैं यह वैराइटी आत्माओं का वृक्ष है तो सबमें विभिन्नता तो होगी ही। और फिर अब तो समय ही ऐसा चल रहा है। यहाँ तक कि हर धर्म के अनुयायियों में भी आपसी मतभेद और फूट पड़ी है तो फिर किसी के पार्ट को देखकर दु:खी और अशान्त होने की क्या आवश्यकता है। हमें तो अपने पार्ट को श्रेष्ठ बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

निराशा का सूर्यास्त और आशा का सूर्योदय

कल्प वृक्ष के विषय में बाबा के इन महावाक्यों

कि "मीठे बच्चे, यह वृक्ष तमोप्रधान, जड़जड़ीभूत हो गया है। अब तो नये वृक्ष की कलम लगने का समय है। मैं आया ही हूँ इस पुरानी दुनिया को नया बनाने। बस, अब यह पुरानी दुनिया खत्म हुई कि हुई; अब यह और अधिक चलने की नहीं है। अब घर वापस जाना है और फिर लौटकर तुम्हें सुखधाम में आना है···" की स्मृति आने से एक तो इस कलियुगी, पतित, पुरानी, सड़ी हुई दुनिया की वस्तुओं से आसक्ति समाप्त हो जाती है क्योंकि अब हम जान गये हैं कि घर वापस जाने का समय नज़दीक है। इस दुनिया में तो हम चन्द रोज़ के मेहमान हैं। दूसरे, इस समस्याओं से पूर्ण संसार में नित नई-नई समस्याओं, मुश्किलातों व विघ्नों का सामना करते-करते कभी-कभी जीवन में जो निराशा-सी होने लगती है, उसका अन्त हो आशा की किरण चमक उठती है क्योंकि बाबा ने हमें बता दिया है कि ये दुःख के दिन अब पूरे होने ही वाले हैं, अब तो सुख का संसार आ रहा है। और तीसरे, यह जानकर, कि अब तो हमें परमात्मा मिल गया, उसने हमें अपना बना लिया, तो वह मौलाई मस्ती (Spiritual intoxication) चढ़ जाती है जिससे आत्मा अतीन्द्रिय सुख का आनन्द लेने लगती है।

आत्माभिमानी बनने की प्रेरणा

इस कल्प वृक्ष की व्याख्या से ही हमें मालूम पड़ता है कि जब से मनुष्य देहाभिमानी बना, तभी से उसका पतन प्रारम्भ हुआ। वह दुख और अशान्ति के घने जंगल में फंस गया। देहाभिमान के कारण ही विभिन्न दीवारें खड़ी हो गईं जिससे आपसी स्नेह समाप्त हो गया। देहाभिमान रूपी बीज से ही अनेकानेक विकारों तथा अवगुणों रूपी शाखाओं वाला वृक्ष उत्पन्न होता है। अतः यह जानकारी हमें आत्माभिमानी बनने की प्रेरणा देती है क्योंकि आत्माभिमान रूपी बीज अनेक दिव्य गुणों तथा पवित्रता रूपी फलों से लदे वृक्ष को जन्म देता है।

पुरुषार्थ में तीव्रता व गम्भीरता

कल्प वृक्ष का ज्ञान हमें समय की पहचान भी देता है कि वर्तमान समय पुरुषोत्तम संगम युग चल रहा है जिस पुरुषोत्तम कल्याणकारी युग में कल्याणकारा परमात्मा मानव को देव बनाने अथवा नर को श्री नारायण तथा नारी को श्री लक्ष्मी पद दिलाने के परम कर्त्तव्य में तत्पर हैं। अतः यही समय है जब हम आत्माएँ स्वयं भगवान के साथ कर्त्तव्य में सहयोगी हो सकते हैं। इस थोड़े-से काल म ही हमें द्वापर युग से किये गए विकर्मों को भस्म करना है और भविष्य के लिए सुकर्मों की पूंजी जमा करनी है। इस प्रकार विचार करने से हमारे पुरुषार्थ में तीव्रता व गम्भीरता आ जाती है कि इन थोड़ी-सी अमूल्य घड़ियों में हमें स्वयं को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हुए अन्य आत्माओं को भी यही प्रेरणा देनी है।

श्रेष्ठ कर्म करने व पवित्र जीवन व्यतीत करने का दृढ़ संकल्प

ईश्वरीय ज्ञान समझने से पहले हम यही सुनते थे कि दुनिया में पाप और पुण्य, दुःख और सुख सदा से ही चला आया है। परन्तु कल्प वृक्ष की जानकारी से जब हमें यह मालूम पड़ता है कि सतयुग और त्रेतायुग पूर्ण पवित्र दुनिया थी और कि वहाँ किसी विकार, दुःख और अशान्ति का नाम भी नहीं था, तो पाप कर्मों अथवा विकर्मों से बचने व पवित्र जीवन व्यतीत करने का संकल्प और ही दृढ़ हो जाता है चूंकि अब फिर से उस दुनिया की स्थापना हो रही है।

स्वमान की जागति

कल्प-वृक्ष की व्याख्या से यह भी स्पष्ट होता है कि हम ही वे सच्चे पाण्डव हैं जिनकी परमात्मा से प्रीत बुद्धि है और जो ज्ञान और योग के अस्त्रों-शस्त्रों से सुसज्जित होकर किकारां रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर दैवी स्वराज्य पाने के अधिकारी बन रहे हैं। हम ही वो असुर संहारिणी शिव

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

अब विश्व को ऐसे युवक चाहिएं

(ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

देहों के फर्शों से परे रह सकें अर्श पर,
फरिश्तों सी चलन औ रुहे नज़र लेकर,
कायम अमन करें लेके ज्ञान तलवार,
अब तो—
विश्व को ऐसे युवक चाहिएँ।

छोड़ वतनों का वतन, वो बापों का बाप,
खुशहाल बनाने अब, आया खुद खुदा आप,
भुजा बनें उसकी तज दैहिक प्यार,
अब तो—
विश्व को ऐसे युवक चाहिएँ।

चाह जानने की "नचिकेता" सी, आज्ञा मानें "आरुणि" सम
राह जीने की "गाँधी" सी, ब्रह्मचर्य "विवेकानन्द" सम
हों एक साथ ये सभी बातें जिनमें—
अब तो—
विश्व को ऐसे युवक चाहिएँ।

शहीदों का त्याग, 'नानक' का वराग,
'मीरा' सी लगन, वीरों सी आग;
"बुद्ध" सी झलक, ईश्वरीय फलक,
शीतलता-शान्ति का बन अवतार—
अब तो—
विश्व को ऐसे युवक चाहिएँ।

योग बल और दिव्य कर्म,
शुभ भाव और हर्षित मन,
लिए आ जाएँ मैदाने पुरुषार्थ में
तन से युवक हों न हों
पर मन के युवक अवश्य चाहिएँ।
अब शिव को ऐसे युवक चाहिएँ॥

"शिव परमात्मा आया है"

ब्र० कु० पुरुषोत्तम, मद्रास

सर्व आत्माओं का प्यारा
"शिव" परमात्मा आया है,
पिता श्री ब्रह्मा के मुख से
ज्ञानामृत बरसाया है।

मंदिर मस्जिद गुरुद्वारों में
तुमने ढूंढ़ा जिसे वर्षों से
वो ही तुमको है पुकार रहा
पूरे अड़तालीस वर्षों से।

तुम भटक रहे हो सदियों से
इस मायावी संसार में.
वह मिल जायेगा तुम्हें सहज
भारत के आबू पर्वत में।

अब कर लो तुम स्वीकार उसे
वह पतित पावन आया है,
"अजामिल" सी पापात्माओं को
उसने पावन बनाया है।

गंगाजल से कितना धोया
फिर भी ना आत्मा स्वच्छ हुई,
अब व्यर्थ ना समय गंवाओ तुम
कलियुग की घड़ियाँ खत्म हुईं।

तुम कौन हो ? वह स्वयं कौन
सब उसने सच बतलाया है,
जग के आदि मध्य अन्त का
उसने राज समझाया है।

यह हीरे जैसा जन्म अमोल
गर अब भी व्यर्थ गँवाओगे
कुछ तो सोचो ओ जग वालो
अन्त काल बहुत पछताओगे।

सर्व सम्बन्ध का मीठा रस
हमने उससे ही पाया है,
यही कारण है कि "शिव प्यारा"
हम बच्चों के मन भाया है।

वो राजयोग सिखला रहा
हम बच्चों को इस भूतल पर
क्यूँ न हम विश्व महाराज बनें
शिव के श्रेष्ठ मत पर चलकर।

दो विश्व युद्ध तो हो चुके
अब तीसरा होने वाला है
बनना है तो बन जा शिव का
वरना दुःख के पहाड़ आना है।

हर तरफ विनाश का दृश्य बना
कुम्भकरण सी अब ना नींद करो,
सब कुछ था सो तो लुटा दिया
अनमोल समय तो न नष्ट करो।

विकारों पर जीत पाकर
माया जीत जगत जीत बनो,
दुःख दर्दों की जेल में अब
अपने आपको न कैद करो।

विश्वास

ब्र० कु० आत्म प्रकाश, आबू

(अनीता अपनी सखी सुनीता के साथ अपने कमरे में बैठकर बातें करते हुए।)

अनीता—सुनीता बहिन, देखो आज इस कलि-युगी पतित दुनिया की हालत क्या हो चुकी है जो कोई किसी पर भी विश्वास नहीं रख सकता। जिस किसी पर भी विश्वास रखो तो वही धोखा दे देता है।

सुनीता—हाँ बहिन, सचमुच कोई विश्वासपात्र नजर नहीं आता है। दूसरों की तो बात छोड़ो, लेकिन जिसे हम अपना समझते हैं, वो भी हमारा विश्वासघात करता है।

अनीता—(करुणामय बोल से) क्या करें बहिन, इस माया के पाँच सेनापतियों ने सभी का माथा मूँड लिया और अपना खिलौना बनाया है खिलौना!

सुनीता—ये तो बात बिल्कुल सत्य है बहिन, माया ने हरेक की स्वतन्त्रता छीन ली और अपने जंजीरों में फँसाकर दुखदाई जेल में डाल दिया है। अभी भी वो सभी को कठपुतली की तरह नचा रही है।

अनीता—कहा जाता है कि एक समय था जब कि व्यक्तियों की लेन-देन तथा सभी कार्य विश्वास के बल से ही चलते थे। लेकिन आज तो विश्वास का नाम निशान ही नहीं रहा है।

सुनीता—(शोक से) कैसी ये अजीब हालत बनाई है इस निर्दयी माया ने। हरेक के विश्वास में विष (Poison) वास कर रहा है। प्रायः व्यक्ति अपने स्वार्थ को ही केन्द्र-बिन्दु समझकर सोचता है या कार्य करता है।

अनीता—हाँ बहिन, जो मनुष्य कल रक्षक था आज वो भक्षक बन गया है। किसी भी जन पर हम विश्वास नहीं रख सकते।

सुनीता—अनीता बहिन, जन पर विश्वास तो क्या आजकल अपने तन पर भी विश्वास नहीं रख सकते। कहते भी हैं "न जाने जीवन में कब आयेगा अन्धेरा" ये बिल्कुल सत्य है। जो तन, आत्मा का साथी है, अचानक किसी भी बीमारी का शिकार बनकर हमें तड़पा सकता है। आज जिस पर हमें नाज़ है, वह कल के दुःखों के काले बादलों से हमारे जीवन को ढक सकता है।

अनीता—इतना ही नहीं सुनीता, जो हमारे पास धन है उस पर भी हम विश्वास नहीं रख सकते। आज कोई अमीर है, कल वह दर-दर ठोकरें खाने लग सकता है। आज मेरे पास अथाह धन है वह सदा के लिए मेरे पास ही रहेगा ऐसा विश्वास से नहीं कह सकते।

सुनीता—अनीता बहिन, धन की तो बात छोड़ो लेकिन हम अपने श्वास पर भी विश्वास नहीं रख सकते। किसी को भी पता नहीं है कि मेरा अन्तिम श्वास कौनसा होगा।

अनीता—(गंभीरता से) बहिन सुनीता, श्वास तो क्या हम सेकिण्ड पर भी विश्वास नहीं रख सकते। कौन जाने कौनसा सेकिण्ड हमारे लिए दुखदाई होगा।

सुनीता—अनीता बहिन, सचमुच जो भी हमारे विभिन्न रूप से साथी हैं, उन्होंमें से किसी पर भी हम विश्वास नहीं रख सकते। आखिर रखें तो हम विश्वास किस पर! किसको हम अपना सहारा बनाएँ!!

अनीता—(आँखों से आँसू पोंछते हुए) बहिन, आजकल तो मेरा अपने जीवन से ही विश्वास खत्म हो चुका है। इस बेचैन मन के कोने में भय सदा छिपा हुआ रहता है जिससे कई बार रात-रात मुझे नींद भी नहीं आती। सदा यही सोच चलता है कि आखिर भी इस इन्सान में इन्सानियत लाने वाला कौन? वह कब इन्सान के दिल दिमाग में विश्वास की ज्योत जागृत करेगा?

(तीसरी सखी आशा रास्ते से गुजरते हुए खिड़की से झाँककर दोनों को देखती है और पुकारने लगती है)

आशा—(आश्चर्य से) अरे! आप दोनों अभी तक यहाँ ही बठी हो, कॉलेज जाने का समय हो

गया फिर भी निश्चिन्त होकर बातें करने में व्यस्त हो। चलो···जल्दी चलो···

अनीता—(घबराहट से) सचमुच समय हो गया क्या ? सुनीता, देखो तो सही तुम्हारी घड़ी में क्या टाईम हो गया ?

सुनीता—(हँसकर) अरे आशा, तुम्हें आज क्या हो गया तुम्हारी घड़ी ठीक चल रही है ? अभी तो केवल ९ ही बजा है और कह रही है समय हो चुका है। तुम्हारी घड़ी है या डिब्बी ?

आशा—मैं हँसी नहीं कर रही हूं बहिन, देखो मेरी घड़ी में १० बजा है।

अनीता—अरे आशा बहन, देखो तो सही उस घण्टाघर में भी ९ ही बजा है।

आशा—अरे, इसका मतलब मेरी घड़ी आज तेज चल रही है।

सुनीता—आशा बहिन, आजकल की घड़ियों पर भी विश्वास नहीं रख सकते। अभी तो एक घण्टा बाकी है। आओ, हम थोड़ा समय आपस में विचारों की लेन-देन करें।

आशा—क्यों नहीं बहिन, अभी तो मैं निश्चिन्त होकर बैठ सकती हूँ। लेकिन पहले ये बताओ कि आप दोनों की आपस में क्या चर्चा चल रही थी।

अनीता—आशा बहिन, आज हम बड़े गंभीर तथा महत्वपूर्ण विषय पर विचार विमर्श कर रही थीं।

आशा—(उत्सुकता से) कौन सा विषय था बताओ तो सही बहिन···

अनीता—विषय था विश्वास, जो कि आदिकाल से इस दुनिया का आधार रहा है लेकिन आज वह मिटता जा रहा है। क्योंकि वर्तमान समय हम अपने तन, मन, धन, जन, समय तथा श्वास किसी पर भी विश्वास नहीं रख सकते।

आशा—हाँ, बात तो आपकी बिल्कुल सत्य है। इस माया दुश्मन ने सबके नाक में दम कर दिया है। आज चहुँ ओर उसका ही बोलवाला है। लेकिन हाँ, एक बात ज़रूर है···

अनीता—हाँ···हाँ···बोलो आशा बहिन, आप अपने भी विचार सुनाओ···

आशा—(गंभीरता से) अगर व्यक्ति परमात्मा पर विश्वास रखे तो उसका सब कुछ भला हो सकता है। जो हम सभी का परमविश्वासनीय है, वो अवतरित होकर सभी के अन्धेरे मन में विश्वास की ज्योति जगा रहा है।

सुनीता—लेकिन परमात्मा किसने देखा है बहिन ! वह कौन है, कहाँ है यह कोई जान ही नहीं सकता।

आशा—आपकी बात भी ठीक है ! मैं भी पहले यही मानती थी कि परमात्मा का अन्त कोई नहीं पा सकता। लेकिन वास्तव में अभी वो ज्ञान-सूर्य इस घोर अन्धकार भरी दुनिया में अपनी किरणों से मानव जाति को रोशनी प्रदान कर रहा है।

सुनीता—(हँसकर) सुनो अनीता बहिन, आशा की बात। यहाँ तो गली गली में भगवान कहलाने वाले हैं। कोई नई बात सुना रही है क्या···

आशा—बहिन, जरा गंभीरता से सोचो, गली-गली में भगवान होते तो ये आत्मा रूपी कलियाँ मुरझाती नहीं।

अनीता—आप ठीक कहती हो बहिन, लेकिन आज परमात्मा में विश्वास करना माना अन्ध-विश्वासी बनना है। और मुझे अन्धविश्वास से बहुत ही नफ़रत है। मैं तो प्रत्यक्ष प्रमाण के बिना किसी भी बात को मानने के लिए तैयार नहीं हूँ। यदि आप इसका कुछ प्रमाण दे सको तो बताओ।

आशा—देखो अनीता बहिन, कहा भी जाता है कि दूध का जला छाछ भी फूंक लगाकर पीता है। आज भगवान के नाम पर तथा स्वयं को भगवान कहलाकर पूजा कराकर चन्दा पाने का धन्धा बहुत करते हैं। और यह वास्तविकता है कि आज भगवानों की भीड़ में भगवान ही खो गया है। ये सब धर्मग्लानी के चिन्ह नज़र आ रहे हैं। किन्तु सत्य कभी छुपता नहीं।

सुनीता—बात मैंने आपकी समझी बहन, लेकिन आज सत्य ही कसोटी क्या है, किसे सत्य कहें और

किसे झूठ ?

आशा—सत्य की कसोटी है व्यक्ति का अनुभव। परमात्मा को पाकर आत्मविश्वास जागृत न हो, ऐसा नहीं हो सकता। आप तो मेरे स्वभाव को बचपन से ही जानती हो। मैं कभी भी किसी की बात को तर्क की कसोटी पर खरा उतारे बिना स्वीकार नहीं करती। क्योंकि तर्क मुझे प्रिय है कुतर्क नहीं।

अनीता—देखो बहिन, नाराज़ नहीं हो जाना। मैं आज अपने दिल की बात आपसे कह ही देती हूँ। मैंने सुना है तुम पिछले ६ महीनों से ब्रह्माकुमारी आश्रम में सत्संग करने जाती हो, तब से आपके व्यवहार में कुछ-कुछ परिवर्तन नज़र आ रहा है। लेकिन एक बात पूछूँ···

आशा—हाँ···हाँ···पूछो, जो भी कुछ पूछना है पूछ सकती हो। मुझसे अगर कोई व्यक्ति प्रश्न पूछता है तो मुझे प्रसन्नता होती है। क्योंकि मैं समझती हूँ कोई प्रश्न पूछता है माना वो अपनी बुद्धि का प्रयोग करने वाला बुद्धिजीवी व्यक्ति है। वह अन्धविश्वास पर भेड़चाल चलने वाला नहीं है।

अनीता—पिछले सप्ताह से जब आप ब्रह्माकुमारी आश्रम के मुख्यालय आबू पर्वत से होकर आई हो, तब से आपका उठना, बैठना, बोलना तथा हँसना सब कुछ बदल गया है। सदा शान्त रहती हो। लगता है तुम पर वहाँ किसी ने जादू तो नहीं कर दिया···

आशा—आपका तर्क बिल्कुल सत्य है बहिन, ऐसा आपका सोचना स्वाभाविक है। जो भी मुझे देखता होगा ऐसा ही सोचता होगा। बहिन सोचो, जिसकी एक झलक पाने के लिए ये बेचैन नयन तरसते थे, उससे सन्मुख मिलन मनाकर, उसकी अद्भूत वाणी की वीणा सुनकर किसका मन न नाच उठेगा। मैं तो सदा उसके प्यार में खोई रहती हूँ। मन ही मन उस ही प्राणनाथ के गुण गाती रहती हूँ।

सुनीता—(गंभीरता से) लगता है आपको परमात्मा ने दर्शन दे दिया···क्या यह सच है ?

आशा—इसमें भी क्या कोई छिपाने की बात है। भक्ति मार्ग में जो गायन है तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो···इन सभी सम्बन्धों के अनुभवों का परमानन्द मैं अनुभव करती हूँ···मेरी आँखों में उस प्रियतम की मीठी छवि छा चुकी है···मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी जीवन रूपी नैय्या वो ही खिवैय्या इस भवसागर से पार लगाएगा···इसलिए मैंने अपने जीवन की डोर उस परम-विश्वासनीय प्राणनाथ के हाथ में सौंप दी है···जिससे मैं सदा निश्चिन्त रहती हूँ···

अनीता—इसका मतलब जिसकी तलाश संसार कर रहा है वह सभी का सहारा परम विश्वासनीय परमात्मा सचमुच आ चुका है···

आशा—इतना ही नहीं बहिन, उस ज्ञान सागर परमात्मा ने सभी गुह्य रहस्यों को बताकर मुझे निर्भय बना दिया। और जो भी महान आत्माएँ उन्हींके श्रीमत पर चल रही हैं उन्हें वह गारंटी करता है कि **"सदा स्वयं को आत्मा समझ, मुझ एक निराकार परमात्मा को याद करो तो मैं आपको पतित से पावन बनाकर घर वापस ले चलूँगा"**। तो भला बताओ उसके महावाक्यों पर किसको विश्वास न होगा जबकि हमें प्रत्यक्ष रूप में वह सन्मुख अपनी शक्तियों का अनुभव करा रहा है।

सुनीता—(गंभीरता से) आशा बहिन, आपके जीवन में जो अनुभव हो रहे हैं, उन्होंके आधार से मुझे भी सत्यता का कुछ आभास हो रहा है। लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास तब होगा जब मुझे स्वयं को ऐसे अद्भुत अनुभव होंगे। क्या आप मुझे उस परमात्मा का दर्शन करा सकोगी ?

आशा—क्यों नहीं बहिन, इस मास में ही आबू पर्वत पर आप जैसी प्रभु प्रेमी आत्माओं को विशेष राजयोग शिविर में आत्मानुभूति तथा ईश्वरानुभूति के लिए सादर आमन्त्रित किया है। मैं आप दोनों बहनों का नाम लिखकर आज ही भेज देती हूँ ताकि आपको इस स्वर्ण अवसर का लाभ मिल सके।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

"आर्थिक व्यवस्था के क्षेत्र में क्रान्तिकारी विचार प्रदान करने वाला विश्व का अनोखा विश्व-विद्यालय"

—बी० के० रमेश शाह, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट् (बम्बई)

"धनानि भूमौ पश्वश्चच गोष्ठे,
भार्या गृहै जनः श्मशाने ॥

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने अनेक प्रकार के क्रांतिकारी सफल प्रयासों का प्रयोग किया है। जो कि वर्तमान में वास्तविकता में हो रहा है और हम सब उसी के साक्षी और साथी है। अगर साक्षी और साथी न होते तो हमें ये सोच-विचार जरूर होता कि क्या सचमुच ऐसी क्रांतिकारी विचारों को वास्तविकता का रूप देने वाला विश्वविद्यालय हो सकता है ? इस सत्य को समझना अन्य आत्माओं को कठिन है। परन्तु 1,5,000 से भी अधिक 50 देशों में रहने वाली आत्माओं का चेतन अनुभव है।

इस विश्वविद्यालय में अर्थ-व्यवस्था के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा प्रयोग हो रहा है। जीवन व्यवहार में तीन चीजें सार रूप में मुख्य है—तन, मन, और धन। समाज रचना के ये तीन मुख्य अंग हैं। तीनों को पवित्र कर पावन सृष्टि की स्थापना के कार्य में उन्हें यहां, लगाया जाता है। तन के द्वारा स्थूल व्यवहार होता है, मन के द्वारा विचार उत्पन्न होते हैं और विचार के स्पन्दन के आधार पर तन द्वारा वृत्ति होती है। धन के द्वारा एक-दो के वृत्ति और व्यवहार का विनिमय होता है। धन माध्यम है जिससे पथ से अनेक चीजें एक-दूसरे के पास आती जाती है। धन शक्ति भी है जिससे अन्य चीजों का मूल्यांकन किया जाता है और जिसकी मालीनी के आधार पर अनेक प्रकार की सत्ताओं का केन्द्रीयकरण होता है।

लोग समझते हैं कि धन स्थूल है और उसी कारण एक ही जन्म के साथ उसी का सम्बन्ध है। मृत्यु पर एक श्लोक है :—

अर्थात् धन सिर्फ यहाँ तक ही काम में आयेगा। पशु जो है वह गोष्ठा में रहेंगे, पत्नि गृहद्वार तक साथ आयेगी और मित्र सम्बन्धी श्मशान तक साथ आयेंगे।

परन्तु ऐसी बात नहीं, धन की सूक्ष्म शक्ति का अर्थ-शास्त्रियों ने अभ्यास नहीं किया है। अच्छे कार्य में लगाया हुआ धन हमें नये जन्म में अच्छे फल के रूप में मिल सकता है। अच्छे कर्मों का अच्छा फल और बूरे कर्मों का बुरा फल ये वैश्विक (Universal law) सिद्धांत है।

अच्छे कर्मों का आधार है अच्छा धन। पवित्र अन्न से मनोव्यापार पवित्र बनता है और उसी के कारण तन भी शुद्ध होता है। ऐसे ही पवित्र धन के आधार पर पवित्र कर्मो को करने की शक्ति मिलती है। जैसे भोजन पकाने वालों की सूक्ष्म तरंगें (Vibration) अन्न को पवित्र बनाती हैं ऐसे ही धन उपार्जन करने वालों की पवित्र वृत्ति, धन के उपर अपनी छाया डालती है। आज भी कई बुजुर्ग कहते हैं कि ये हमारे खून पसीने की कमाई का धन है। मेहनत रूपी स्थूल तथा वृत्ति रूपी सूक्ष्म ईमानदारी का प्रभाव धन पर पड़ता है।

लोग धन को स्थूल रूप से देखते हैं तो यह विश्व-विद्यालय धन के सूक्ष्म पवित्र रूप का ध्यान रखा जाता है। इस विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थी ईमानदारी का कमाते और ट्रस्टी होकर रहते हैं। यहाँ मेरा-मेरा का नाम नहीं मोह या ममता धन में लोभ रूपी मलीनता मिक्स करती है। अहम् भाव का यहाँ ट्रस्टी भाव में परिवर्तन किया जाता है। ट्रस्टी भाव के कारण धन उपार्जन करने के समय, बुद्धि योग धन में नहीं, परन्तु एक परमात्मा के साथ रहता है। दुनिया में जीवन व्यवहार का लक्ष्य है धन।

यहा लक्ष्य है सेवा और सेवा का मुख्य आधार है परमपिता परमात्मा की श्रीमत् । उसी के कारण यहाँ अन्य के धन पर अधीनता नहीं। स्व के पवित्र पुरुषार्थ के आधार पर उपार्जित किये हुये धन के आधार पर प्रभुसेवा और जन-सेवा का लक्ष्य है। स्वयं के त्याग के आधार पर निर्माण किये गये धन में निमित्त भाव आता है औरों के धन के आधार से अधीनता आती है और जहाँ अधीनता है वहाँ स्वतंत्रता नहीं और जहाँ स्व को स्वतंत्रता नहीं वहाँ प्रकृति दासी नही। पवित्र धन के आधार पर की गई पवित्र वृत्ति के आधार पर प्रकृतिजीत नई सृष्टि का निर्माण होगा।

पवित्र धन के आधार पर बनी हुई ईमानदारी की इमारत की बुनियाद (Foundation) मजबूत रहेगी। आज विश्व में अनेक देशों में पूँजीवाद (Capitalism) रूपी व्यवहार चलता है । परन्तु यह पूँजीवाद का बुनियाद मजबूत नहीं। त्याग और पवित्रता के बजाय स्वार्थ और लोभ का मायाजाल वहाँ है। शास्त्रों ने धन को माया या मिथ्या समझा है। धन-शक्ति को वर्जित किया है। अन्य धर्मो में कहा है कि सुई की नोंक से शायद ऊँट (Camel) चला जाए परन्तु स्वर्ग के द्वार से धनवान नहीं गुजर सकता। इस विश्वविद्यालय में धन को माया का नहीं परन्तु नई सृष्टि के निर्माण का आधार माना जाता है और इसीलिये नियम रखा गया कि यहाँ पर डोनेशन (Donation) के रूप में, चैरिटी (Charity) के रूप में धन नहीं लिया जावेगा। चैरिटी (Charity) में गरीब और धनवान के सूक्ष्म अहँकार की मलीनता है। यहाँ उसी कारण त्याग से भाग्य बनाने का अर्थात् अपने भविष्य अर्थ जमा करने का एक अनोखे प्रकार का दैवीय बैंक का स्वरूप है और उसी कारण व्यर्थ खर्चो से बचत करा के जमा करने की शिक्षा यहाँ दी जाती है।

अन्य कई संस्थायें चन्दा के आधार पर चलती हैं। कीर्तिदान के आधार पर वहाँ देहभान बढ़ता है। चंदा लेने अर्थ वह देने वालों को उसी के उपार्जन करते समय की वृत्ति तथा पवित्र जीवन व्यवहार रूपी मापदंड की उपेक्षा होती है। उसमें एक परिवार की भावना नहीं होती। परिवार में पति-पत्नि बच्चे आदि एक दूसरे के सहयोग से जीवन व्यतीत करते हैं । पति ने पत्नि को गृहखर्च के लिये धन दिया तो उसमें दान की भावना नहीं होती। उस में कर्ज अदाई की श्रेष्ठ भावना है। बच्चा अपने मां-बाप की पालना करता है तो उसमें उपेक्षा या उपकार की भावना नही होती परन्तु ऋण अदा करने की झंखना है। उसी तरह से विश्वविद्यालय रूपी परिवार के हम सर्व आत्मायें परमपिता परमात्मा के विश्व परिवर्तन के महान कार्य में मददगार है, ये विश्वविद्यालय का कार्य हम ब्राह्मणों का स्वधर्म है, परमकर्तव्य है। इसप्रकार के अर्थशास्त्र के क्षेत्र में श्रेष्ठ विचारों की पूर्ति कराने वाला यह विश्वविद्यालय है। दान या उपकार के बदले में फर्ज अदा की पवित्र वृत्ति है।

दुनिया में धन संग्रह में चोरी का डर है। अनेक प्रकार की सावधानी रखते हैं। फिर भी कई बातें बनती है। यहाँ तो परमात्मा को धन का रक्षक बनाकर निश्चितता होती है। और परमात्मा के पास उसी का इन्श्योरेन्स (Insurence) होता है। परमात्मा से इन्श्योरेड (Insured) कराके नये स्वर्गीय विश्व में उसी के श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त कराने का बहुत ही अद्भुत कार्य यहाँ पर होता है। ये भी एक नई बात है। वह सिकन्दर बादशाह भी खाली हाथ गया। वह बनना चाहता था, विश्व महाराज (World Emperor) यहाँ वह स्वप्न साकार होता है। खाली हाथ नहीं किन्तु भरपूर भाग्य के साथ जाने का यहाँ पुरुषार्थ सिखाया जाता है। तो ऐसा अनेक प्रकार के प्रयोग धन के क्षेत्र में करनेवाला यह विश्वविद्यालय है और ये है यहाँ अर्थ व्यवस्था के क्षेत्र में क्रांतिकारी विचार । इन विचारों के आधार पर नये विश्व का अर्थशास्त्र तो बनेगा परन्तु अगर वर्तमान में भी सब भी उसी के आधार पर जीवन व्यवहार बना लो तो इस धरापरस्वर्ग जल्दी आयेगा।

आज की सृष्टि में अर्थ-व्यवस्था में भ्रष्टाचार व्यापक है। भ्रष्टाचार, ये जीवन व्यवहार बन गया है, किसी की उसके प्रति कड़ी दृष्टि नहीं। तब धन को पवित्रता का स्वांग देकर उसे समाज व्यवस्था के आमूल परिवर्तन में मददगार बनाने का लक्ष्य रखकर उसी प्रकार के लक्षण धारण कराने के विशेष आग्रही प्यारे शिवबाबा को और उनके निमित्त रथ या माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा को इस स्मारिका के शुभ प्रसंग पर लाख-लाख सलाम और प्रेमभरी स्मरणांजलि।

जीवन परिवर्तन का अलौकिक अनुभव

ब्र० कु० रामसिंह, खानपुर, नई दिल्ली

बचपन में ही रामचरित्र मानस में राम के विभिन्न चरित्रों एवं रावण से युद्ध पढ़कर पुलकित होता था। रामलीला देखने का इतना शौक था कि दिन में सोता और रात को जागता था। गाँवों से मीलों दूर रामलीला देखने जाया करता था। धीरे-धीरे ये कथायें मुझे अधिक दिन तक बहला न सकीं और मुझे राम के रूप के बारे में विचार करना पड़ा। कई महात्माओं से मिलता। जिसने भी रामचरित्र मानस की चौपाई पढ़कर कुछ समझाया, तो उसे गुरु मानने लगता। शास्त्रों में पढ़ा था, कि प्रभु की कृपा तभी सम्भव है, जब सच्चा गुरु मिल जाये। सच्चे गुरु की तलाश में मन और तन दोनों भटकने लगे।

राम, दशरथ के पुत्र थे और पुत्र के शोक में दशरथ की मौत हो गई, जब यह सुना, तो संकल्प चलने लगते, कि जिसके शरीर की विर्चशक्ति से राम परमात्मा पैदा हुआ, वही इतना बड़ा मोही निकला कि पुत्र का वन गमन सहन न कर सका। उस राम से क्या फायदा, जिसकी दशरथ ने कितनी सेवा की होगी, कितने बड़े यज्ञ के बाद उसे पदा कर सका। वह राम दशरथ का मोह न हर सका और बेचारा दशरथ, राम (अपने पुत्र) के शोक में ही मृत्यु को पाया। बाद में लंका में राम, दशरथ को दृढ़ ज्ञान का उपदेश देते हैं—"पिताह, चितड़ दिन्हो दृढ़ जाना।" मुझे लगा, यह राम कोई और थे, और दशरथ के पुत्र कोई और। निश्चय ही दृढ़ ज्ञान का आदेश देने वाले राम परमात्मा दिलाराम ही होंगे। इस प्रकार विचार परिवर्तन हुआ और मन दशरथ के पुत्र राम से खिन्न हो गया। मुझे लगने लगा कि जो अपने बाप का कल्याण तुरन्त सीधे ही न कर सका, मृत्यु के बाद ही दृढ़ ज्ञान दिया अर्थात् अवश्य ही परमात्मा का परिचय दिया होगा। अब मन उस प्रभु परमात्मा की खोज में लग गया।

अब मैंने वेदान्त सुनना शुरू किया, वेदान्ताचार्यों से श्रवण करके आत्मा, परमात्मा का निरूपण घंटों बैठ करता रहता। आत्मा, परमात्मा का कभी निश्चय करता, लेकिन यह निश्चय कभी-कभी बुद्धि से फ़िसल जाता। तार्किकों की कई पुस्तकें पढ़ीं और तर्क से गणित के आधार पर परमात्मा को सिद्ध करना सीखा। मैंने सोचा, ज्ञान का मतलब काफी श्लोक याद हो, गीता रट डाले। आत्मा, परमात्मा पर घंटों बोलने का सामर्थ हो जाये, ऐसी चर्चा छोड़ दे कि लोग हतप्रभ हो जायें। ऐसी तर्क संगत बात कहूँ, कि बोलने वाले की बात कट जाये। ऐसा ही नशा सवार हो गया। फिर क्या था, उपनिषदों को पढ़ना जारी हुआ, समाचार पत्रों में देखना कि कौन महात्मा कहाँ प्रवचन कर रहा है, इस प्रकार मेरा दिमाग इतना तार्किक हो गया कि सोचता, कोई मुझसे आध्यात्म की चर्चा करे उसे मैं उलझा दूँ और वह मान जाये कि किसी विद्वान महात्मा से पाला पड़ा है। फलस्वरूप जिस भी सतसंग में जाता, वह सतसंग बदल झगड़ा शुरू हो जाता। आध्यात्म ज्ञान का इतना अहंकार बढ़ा कि मूर्ति-पूजकों को हेय दृष्टि से देखता और यदा-कदा उनका अपमान भी करता। मन्दिरों में जाना छूट गया, लेकिन तर्क ज्ञान ने मानस में वह अग्नि जलाई कि चैन नहीं मिलता। किसी ने मुझे ध्यान करने की सलाह दी, एकान्त में बैठ ध्यान करता, तो संकल्पों, विकल्पों की आंधी उठने लगती। अन्दर से आवाज़ आती, जैसे कोई कह रहा हो 'अरे वक-ध्यानी!, "तू दूसरों को तो बड़ी अच्छी शास्त्रीय भाषा में आध्यात्म समझाता है आचरणवान बनने को कहता है और तू खुद क्या है? अन्दर कुछ, बाहर कुछ। कब तक ऐसे रहेगा? यह आँख बन्द करके देख, तेरा बगुला-ध्यान का फल केवल भरभेट मछली ही है। परमात्मा नहीं।" ध्यान में स्वयं

पर बड़ी शर्म लगती और अपने पर ही गुस्सा आता और घबरा कर ध्यान से उठ खड़ा होता। मुझे लगा, अब मुझे कोई न कोई गुरु करना ही होगा। गुरु के लिये कई नामी ग्रामी सन्त महात्माओं से मिला, लेकिन उनके गुण और अवगुण का तुलनात्मक चार्ट बनाता, तो अवगुण ज्यादा होने से निराश हो जाता। इस प्रकार मैं अशान्ति में भटक-भटक कर जी रहा था।

अचानक मेरा सम्पर्क ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय से पिछले ही वर्ष हुआ। मालवीय नगर के निकट खानपुर गाँव में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था, मैं जब वहाँ पहुँचा तो मुझे ब्रह्माकुमारी बहन ने चित्रों द्वारा व्याख्या दी और सत्य परमात्मा पिता शिव का परिचय दिया। शिव का नाम तो सुना ही था जप भी किया था, लेकिन उनके रूप का वास्तविक परिचय पाकर मन उमंगों में हिलोरें लेने लगा। मात्र परिचय में ही परमात्मा की शक्ति ने पता नहीं, क्या जादू डाला, कि मेरा मन विह्वल हो उठा, पिछली तर्क बुद्धि पंगु होने लगी, भटके हुये राही को मानो सही मंजिल की राह मिल गई हो। जिस भगवान को वेदपुराण नेति-नेति कहते हैं मुझे लगा वह मेरे सामने खड़े हैं। ब्रह्माकुमारी बहन उनके गुणों की ओर इशारा कर रही थी। लगा, प्रभु स्वयं ही मुझे अपना परिचय दे रहे हों। परिचय के पश्चात् मैंने सात दिन का कोर्स किया। कोर्स के दौरान भी कभी-कभी शास्त्र से मेल न खाने के कारण प्रश्न कर बैठता, लेकिन उनके सहज उत्तर से ही चुप हो जाता। लगता मेरी जबान में जान नहीं है, तर्क की ताकत मर गई है, लगता, भगवान बाबा कह रहे हो "बच्चे—पुरानी दरिद्रता को भूल जा, अब तो चुपचाप बाप से लाभ ले। बहुत चीखा-चिल्लाया, अब तो शान्त रह और बाप से सुन।"

परमात्मा की याद से मुझे लगता, कि मेरे सब पाप भस्म हो रहे हों। शरीर हल्का होता जा रहा है। ऐसी सात्विक दृष्टि पहले कभी नहीं देखी थी। इस योग दृष्टि के मिठास का वर्णन मैं शब्दों द्वारा नहीं कर सकता। जिस प्रकार यह कहा जाता है सिद्ध पुरुष के हाथ रख देने से चमत्कार हो जाता है, साक्षी भाव में टिकने से संसार के दुख ध्वस्त हो जाते हैं, मैंने यह अनुभव किया कि परमात्मा की एक दृष्टि पड़ जाने से जन्म जन्मातर के पाप जल खाक हो जाते हैं। और मनुष्य देवता बनने को उत्सुक हो उठता है।

भगवान ने जब कहा कि बच्चे तुम याद करो, तुम मेरे ही हो सिर्फ देहअभिमान के कारण स्वयं को और मुझे भूल गये हो। मुझे लगा, जैसे किसी संसार रूपी मेले में मेरा हाथ बाप से छूट गया हो और अब बाप मुझ रोते-चिल्लाते अनाथ बालक को गोद में लेकर आंसू पोंछ रहे हों। जब बाबा ने कहा कि तुम भूल गये हो, तुम सदा-सदा से मेरे बच्चे हो। बाप को पाकर मन खुशी में झूम उठा और तन भी नाचने लगा।

आज जब पिछले दिनों को देखता हूँ, तो लगता है भगवान बाबा ने तो कमाल कर दी, न जाने किस पुरुषार्थ का फल दिया। सचमुच बाबा ने मेरी सड़ी हुई बुद्धि को दिव्य सर्जरी द्वारा रूपान्तरित कर दिया।

यह परमपिता शिव बाबा का ज्ञान सबके लिये है, किसी भी जाति में पैदा हुआ हो, रहने सहने के संस्कार किसी जाति विशेष के हों तब भी वह परमात्म ज्ञान को ग्रहण कर सकता है। ज्ञान मुरली का सेवन करना सबका जन्म सिद्ध-अधिकार है। इसके लिये पौशाक और जाति की बाधा नहीं। बाबा का ज्ञान किसी विशेष धर्म, जाति, सम्प्रदाय, मजहब का नहीं, परन्तु सबके लिये है।

बाबा ने सम्पूर्ण अखुट खजानों की चाबी लेकर खजानों को खोल दिया है। सभी बच्चों को ललकार रहा है—समय बहुत कम है जितना खजाना लेना चाहो, अब ले सकते हो, लूट सकते हो। संगमयुग वर्तमान युग की स्पेशल छूट है। ऐसे रहमदिल, उदारता के सागर भगवान शिवबाबा भोलेनाथ को पाकर कौन गरीब रहना चाहेगा ? ऐसे अखुट खजानों को जो आत्मा लूटना चाहे, वह सहज योग व ज्ञान का श्रवण करे और उसके लिये जगह-जगह स्थापित किये गये ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय से सम्पर्क करे।

युवा पीढ़ी राष्ट्र का विकास स्तम्भ

लेखक—ब्र० कु० रानी, मुजफ्फरपुर, बिहार

किसी भी राष्ट्र का भविष्य युवा पीढ़ी पर ही निर्भर करता है। युवा पीढ़ी राष्ट्र का विकास स्तम्भ होता है। जवानी की कक्षा में प्रवेश करते ही इनमें अदम्य साहस, असीम उत्साह, विशाल महत्वाकाँक्षाएँ एवं अपरिमेय संघर्ष दिखाई पड़ने लगता है। कोई भी समाज या राष्ट्र चाहे कितना भी समृद्धिशाली क्यों न हो, अगर उस राष्ट्र की युवा पीढ़ी कमजोर, बीमार और अस्वस्थ्य हो गयी हो तो निश्चित ही उस समाज या राष्ट्र का भविष्य अंधकार के गहन गर्त में डूब जायेगा। युवा शक्ति वायु का वह झोंका है जो अनियंत्रित रूप में बहने पर, तेज आँधी की तरह सामान्य जन-जीवन को त्रस्त और पस्त कर देता है; लेकिन इनकी शक्ति जब नियंत्रित होकर किसी निश्चित दिशा में बहती है तो सर्वत्र विकास की हरियाली छाने लगती है।

युवा पीढ़ी, जिनके शक्तियों का सद्पयोग होने पर 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की संगीत धारा बह उठती है; लेकिन इन्हीं शक्तियों का जब दुरुपयोग होने लगता है तब इनके प्रत्येक कदम से घृणा, बैर, वैमनस्यता, हिंसा आदि की दुर्गंध निकलकर वातावरण को दूषित बना देती है।

जब कभी भी हमारे सामने किसी ऐसी घटनाओं का वर्णन होता है जिसमें युवा पीढ़ी की तस्वीरें उभरती हों, तो हमारा माथा शर्म से झुक जाता है। हम शर्मिन्दित घटनाओं के कारण नहीं होते, बल्कि इसलिए शर्म से गड़ने लगते कि ऐसे कृत्य करने वाले कोई और नहीं, अपितु उसी देश का ये युवा वर्ग है जिस देश की एक लम्बी धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्परा रही है।

वास्तव में आज की युवा पीढ़ी में लक्ष्यहीनता, उद्वेग और उद्भ्रांतता की जड़ों ने अत्यंत ही चिंताजनक और लज्जास्पद स्थिति को प्राप्त कर लिया है। आखिर क्या हो गया है हमारे देश के इन युवाओं को ? तनाव, उत्तेजना और आक्रोश में पल रहे यह युवा वर्ग दिशाहीनता की ओर बड़ी तेजी से बढ़ते जा रहा है। और देशों के लिए भले ही यह क्षम्य हो; किंतु भारतवर्ष को इन युवा सन्तानों के लिए यह विच्छेपण उचित नहीं प्रतीत होता। निर्माण कार्य में संलग्न रहने के बजाय विध्वंसकारी क्रीड़ाओं में लिप्त; निश्चितता और निर्भीकता के झूले में झूलने के बजाय कायर और डरपोक बने ये युवा पीढ़ी अँधों की लाठी बनने के बजाय स्वयं लाठी ढूँढ़ रही है। सच पूछा जाय तो अंधकार में भविष्य की तलाश कर रहे इन युवाओं का ही सारा दोष नहीं है। इन फूलों को ताजा रहने के लिए न तो उपयुक्त रोशनी ही मिली और न ही वसंत।

यकीनन हमारा युवा वर्ग कसूरवार नहीं हैं। इनके जीवन में एक तरफ यदि घोर निराशा और अस्थिरता है तो दूसरे तरफ विशाल महत्त्वाकांक्षाएँ और संघर्ष भी।

युवावस्था एक वरदान भी है, तो कभी-कभी अभिशाप भी बन जाता है। अभिशाप उनके लिए जो परिस्थितियों से ऊबकर संसार सागर में छपाक् (विलीन) हो जाते हैं और वरदान उनके लिए जो परिस्थितियों को चुनौती देकर, अपनी जवानी का प्रयोग संसार सागर में डुबकी लगा, मोती चुनने में करते हैं।

जब तक हम परिस्थितियों से जुड़े इसी के साथ बह रहे हैं, तब तक मानसिक पीड़ा हमें कीड़ा तुल्य जीवन बिताने को अभिशप्त करता जा रहा है; किन्तु परिस्थितियों से ऊपर उठकर, इन्हीं परिस्थितियों के बीच अवस्थित, लेकिन सर्वथा उपराम आध्यात्मिक जगत के केन्द्र में विराजमान सर्व के

कल्याणकारी पिता परमात्मा से जब हम अपना सर्व संबंध जोड़ लेते हैं तब हम कीड़ा से हीरा बन जाते हैं, महान और कल्याणकारी बन जाते हैं।

युवा पीढ़ी सतत् प्रयत्नशील है मंज़िल तक पहुँचने को ! संभव है इस मार्ग में अनेक समस्यायें रोड़ा बनकर जख्म लगा जायें, लेकिन आध्यात्मिक मरहम इस जख्म पर वैसा ही असर दिखा सकता है, जैसे उफनते दूध पर शीतल जल का फुहार। आध्यात्मिक संबल अति सुदृढ़ और श्रेष्ठतम है जो निर्बल को सबल बना सकता है, दिशाहीन को दिशावत् कर सकता है।

भारत आदिकाल से ही आध्यात्मिक जगत का पावर हाऊस (Power House) रहा है और सम्पूर्ण भौतिक जगत में धर्म और नैतिकता का प्रकाश और शक्ति (Light and might) प्रकंपित करता रहा है। युवाओं की इसमें अग्रगण्य भूमिका रही है। देवताओं का युवावस्था का चित्र अभी भी प्रमाण स्वरूप है। श्रीराम और श्रीकृष्ण को देवताओं के रूप में सारा विश्व स्वीकार करता है, जिनका जीवन आध्यात्मिक शक्तियों से ओतप्रोत था। इनका कोई भी चित्र वद्धावस्था का नहीं पाया गया है। हमारे देश के युवा वर्ग की धमनियों में अभी भी देवताई रक्तधारा विद्यमान है लेकिन कुछ जम सा गया है, जिसे समय प्रति समय अनेक महा-पुरुषों ने आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा पिघलाने की कोशिशें की। कभी बापू ने सत्य-अहिंसा का डंका बजाया तो कभी बुद्ध और महावीर की प्रेम और करुणा की शहनाई भी गूँजी थी।

महापुरुषों की महानता का आधार था आध्यात्मिक शक्ति। उनकी महानता उनके उपदेशों में नहीं, अपितु उनके दिव्य जीवन में थी। आध्यात्म अर्थात दिव्य जोवन, न कि दिव्य ज्ञान।

भौतिक सुखों के पीछे बेतहाशा दौड़ लगा रहे प्राणियों को इतनी भी फुर्सत नहीं मिलती कि एक क्षण यह भी सोच सकें कि जीवन का अब कितना भाग शेष बचा है। अतीत में क्या पाया क्या खोया और अनंत के लिए अब क्या करना चाहिए ? अपने चारों तरफ नित्य घटित होने वाली विध्वंस-कारी लीलाओं को देखते हुए भी वे अपने जीवन को दीर्घ और नित्य मानकर उससे लिपटे और चिपटे पड़े हैं। उन्हें यह भी पता नहीं कि सारे सुखों, सारे वैभवों और समस्त तृप्तियों का आदि श्रोत कहाँ है ? अगर तृप्तियों के इस श्रोत से संबंध जुट जाये, तो फिर क्या जरूरत होगी इस मृग मारीचिका के पीछे दौड़-दौड़कर शक्ति गँवाने की ? सर्वखजानों का सागर अपना हो जाय या सिर्फ सागर में उपलब्ध एक मोती ही काफी है ? बेचारों को वक्त ही कहाँ यह सोचने का।

आध्यात्मिक शक्तियों का प्रयोग केवल इसी क्षेत्रों में ही नहीं; किंतु भौतिक क्षेत्रों में भी विशिष्ट लाभ एवं यश पहुंचाता है। चाहे आर्थिक क्षेत्र हो या राजनीतिक क्षेत्र, चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या युद्ध का, आध्यात्मिक शक्तियाँ अद्‌भत सफलता दिलाती हैं। भौतिक सामर्थ्यों का योग तो और ही चार चाँद लगा देता है।

मुहताज से सरताज बनने की युक्ति

हमारा यही भारत कभी सरताज था। सभी प्रकार के धन-धान्यों से पूरित, देवी-देवताओं का क्रीड़ास्थल आज प्राकृतिक और तकनीकी साधनों की प्रचुरता के बावजूद भी दरिद्रता की बाहूल्यता से भस्मीभूत होता जा रहा है। भौतिक शक्तियों द्वारा हम जितना ही दरिद्रता मिटाने का प्रयास करते जा रहे हैं उतने ही अधिक कुंटाओं के अधिक अँधरी खाई में आकंठ धँसते जा रहे हैं। हम पूरी शक्ति लगाकर सुख-शांति की सुधा सरोवर की तलाश तो कर रहे हैं, लेकिन एक के बाद एक विपत्तियों के आगोश में आलिंगन आबद्ध होते जा रहे हैं। आखिर कहाँ है इसका निदान ? जैसे ये वैज्ञानिक और तकनीकी साधन हमें आगे की ओर बढ़ाने का प्रयास कर रहा है हम उसी रफ्तार से नैतिकता से पीछे हटते जा रहे हैं। चरित्रहीनता की लम्बी जीभ सुख-शांति के प्राण पखेड़ू चाटता जी रही है। □

आओ खेल खेलें

ब्र० कु० प्रेमसागर, लक्ष्मीनगर देहली

सामने हम एक ४९ खानों की बनी सारणी का चित्र दे रहे हैं। जिसमें तीन प्रकार के खाने हैं। पहला सफेद, दूसरा लिखा हुआ, और तीसरा कोला है। अब आपको सफेद वाले खानों में सही उत्तर भरना है। जिससे अन्त में आपको सभी शब्दों को पढ़ने के पश्चात कोई न कोई बापदादा द्वारा दिया गया धारणा युक्त सलोगन मिलेगा। ये सलोगन लगभग १२ शब्दों का होगा। जब आप सफेद वाले खाली खानों को भर लेंगे तो उसके पश्चात् अपने उत्तर का सही मिलान कीजिए, जो कि इसी अंक में कहीं पर दिया हुआ होगा इस खेल को खेलने के लिए निर्धारित समय १० मिनट।

मी	ठे	■	ब	ट	चे	■
	न	■	के	■		र
■	■		ज़	■	को	■
■		न		■		ले
■	■	■		भी	■	■
	रा		■	■		हीं
■	हो	■	■		क	

आपको कितना मालूम है

ब्र० कु० कमलमणि, देहली

१. ब्रह्मा बाप ने कौनसी एक बात का इन्तजार नहीं बल्कि इन्तजाम किया जिससे ही नम्बर वन में गये ?

(अ) अभी नहीं तो कभी नहीं
(ब) छोड़ो तो छूटू
(स) जैसा कर्म मैं करूंगा मुझ देख और करेंगे।
(द) अभी-अभी

२. हम सबका अनादि नाता क्या है ?

(अ) बहन-भाई का (ब) भाई-भाई का
(स) आत्मा-आत्मा का (द) रुह का

३. ब्रह्मा बाप का हम बच्चों से "आदि सो अन्त" का कौनसा वायदा है।

(अ) साथ चलेंगे (ब) साथ रहेंगे
(स) साथ खाएंगे (द) साथ बैठेंगे

४. देवताओं के आदि स्वरूप की कौन-सी महिमा है।

(अ) इच्छा मात्रम् अविद्या
(ब) सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, सम्पूर्ण अहिंसा।
(स) देवतायें अपवित्र धरनी पर पाँव भी नहीं रख सकते।
(द) सम्पूर्ण निर्विकारी

(इसका उत्तर अगले अंक में प्रकाशित होगा।)

कल्पवृक्ष और हमारा जीवन (शेष पृष्ठ १८ का) शक्तियाँ हैं जो सर्वशक्तिवान शिव से शक्ति लेकर आसुरी वृत्तियों का संहार कर रही हैं। इस प्रकार हम अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित हो जाते हैं जिसमें अभिमान (देह अभिमान) की बू नहीं होती।

इस प्रकार यह कल्प वृक्ष हमें अनेक गुण प्रदान करता है। सुनते हैं कि कल्प वृक्ष के नीचे बैठने से सर्व मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। यही वह कल्प वृक्ष है जिसको गहराई से समझने से हमारा जीवन पवित्र, मर्यादा पुरुषोत्तम तथा दिव्य गुणों से सम्पन्न हो जाता है जिसके फलस्वरूप हमें भविष्य में तो उस देव पद की प्राप्ति होती ही है जिसके लिए गायन है 'अप्राप्त नहीं कोई वस्तु देवताओं के खज़ाने में' परन्तु वर्तमान में भी उस अतीन्द्रिय सुख, की प्राप्ति होती है जिसको पाने के लिए राजाओं ने अपना राजपाट भी त्याग दिया। □

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

गोहाटी—प्राप्त समाचार के अनुसार गोहाटी में प्रथम बार इन्टरनेशनल बुक फेयर का आयोजन किया गया था। जिसमें छपाई विभाग की ओर से आध्यात्मिक पुस्तकें रखने के लिए ब्रह्माकुमारी ईश्वरीव विश्व विद्यालय को निमन्त्रण प्राप्त हुआ। इस फेयर का उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति भ्राता वेंकटरमन जी ने किया। ब्रह्माकुमारी बहनों ने इस अवसर पर उपराष्ट्रपति जी तथा उनकी धर्मपत्नी को श्रीकृष्ण का सुन्दर चित्र एवं आध्यात्मिक साहित्य भेंट किया। जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

हाथरस में विश्व आध्यात्मिक मेला—हाथरस में नया मिल मुरसान गेट पर आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन जिला एवम् सत्र न्यायाधीश भ्राता जी० के० माथुर द्वारा सम्पन्न हुआ। इस मेले का अवलोकन जिलाधिकारी पी० एल० पूनियां, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जी० एल शर्मा, पुलिस अधीक्षक भ्राता आर्या जी, हास्य कवि काका हाथरसी, कवि वीरेन्द्र तरुण इत्यादि ने किया। चैतन्य देवियों का मंडप भी सजाया गया था। राजयोग शिविर द्वारा करीब ८०० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

भोपाल—नव वर्ष के शुभ अवसर पर १ जनवरी को सभी ब्राह्मणों द्वारा तथा २ जनवरी को अनेक विशिष्ठ व्यक्तियों द्वारा नारियल फोड़कर भव्य भवन के अनौपचारिक उद्घाटन एवं गृह प्रवेश की रस्म बड़े हर्षोल्लास के साथ पूर्ण की गयी। सभी को चंदन का तिलक लगाया गया।

भ्राता डॉ० आर. के. बिसारिया (मेयर कारपोरेशन, भोपाल) एवम् सर्व श्री बी. पी. सेठ (आइ. ए. एस.) प्लानिंग सेकेट्री म. प्र., एस. एन. राव (आइ. ए. एस.) डायेरेक्टर एकेडमी आफ एडमीनिस्ट्रेशन, आइ. एस. राव (आइ. ए. एस.)—मैनेजिंग डायेरेक्टर खादी गामोद्योग म. प्र. रंजीतसिंह (आइ. ए. एस.)—कमिश्नर भोपाल डिवीजन, मोती सिंह (आइ. ए. एस.)—कलेक्टर भोपाल, देवी सहाय (आइ. ए. एस.)—रिटायर्ड सीनियर सेकेट्री इण्डस्ट्रीज, एच. एम. जोशी (आइ. पी. एस.)—रिटायर्ड डायेरेक्टर जनरल पुलिस, एस. सी. त्रिपाठी (आइ. पी. एस.)—डी. आई. जी. (पुलिस) भोपाल डिवीजन, बी. एल. सिंह चंदेल—कार्पोरेटर भोपाल नगर निगम, बी. डी. अग्रवाल—प्रोपराइटर दैनिक भास्कर ग्रुप, पी. एस. जोशी—जनरल मैनेजर टेलीकाम (म. प्र.) प्रमोद माथुर—जोनल मैनेजर फर्टीलाइजर कारपोरेशन म. प्र., एस. वी. खरे—डिप्टी सेकेट्री (पी. एच. ई.), इनामदार साहब—चीफ इंजीनियर पी. डब्लू. डी., डी. वी. एस. मूर्ति—चीफ इंजीनियर (पी. एच. ई.), एस. के. शर्मा (अण्डर सेकेट्री कल्चरल एक्टीविटीज म. प्र.), भ्राता सुकुमारन (अण्डर सेकेट्री एजूकेशन) आदि।

इस अवसर पर उपस्थित विशिष्ट व्यक्तियों के समक्ष क्षेत्र की सभी प्रमुख बहनों द्वारा २-२ मिन्ट स्लोगन के रूप में ईश्वरीय ज्ञान का उपहार भेंट किया गया। जो काफी प्रेरणास्पद रहे, सभी सुनकर प्रभावित हुए।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित सेवा केन्द्रों से उत्साह वर्धक समाचार मिले हैं—कोल्हापुर, कलकत्ता, कोटा, गुमला, लखनऊ, हिसार, बम्बई, डोंमवली, आर्वी, कटक, उत्तरकाशी, पोरवन्दर, उदयपुर, पुरी, शिव सागर, लातूर, अमृतसर, बेलगाम, कानपुर, पूना, सूरत, जम्बूसर, भीलवाड़ा, दार्जिलिंग, बारियदा, डीसा, चन्डीगढ़, गाँधीनगर, बड़ौदा, भावनगर, इन्दौर जोन, मुजफ्फरपुर, गोंदिया, दिल्ली पहाड़गंज, नरेला, रांची, विलासपुर, बम्बई शान्ता क्रूज, दिल्ली मजलिस पार्क, रायपुर, भंडारा, पणजी गोवा, कलोल नगर, अकोला, दिल्ली चाँदनी चौक व कृष्णा नगर, चन्दरपुर, आदि।

मीठे बच्चे, ज्ञान के हर राज को जानने वाले कभी नाराज नहीं हो सकते।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70